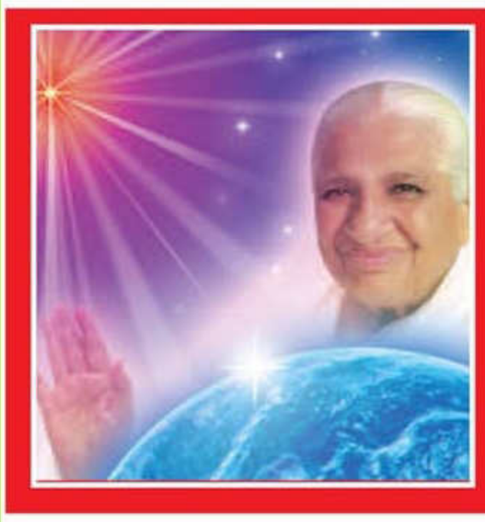

शिव आमंत्रण

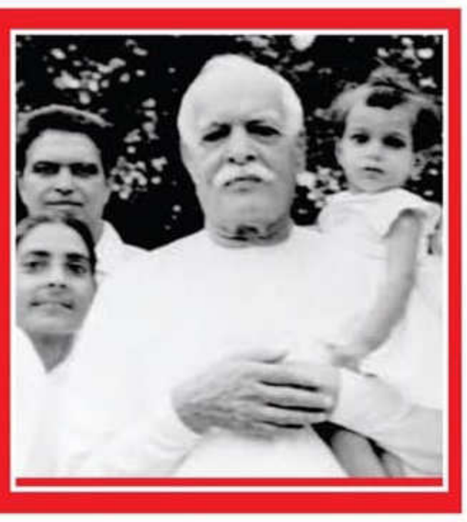

वर्ष: 01 | अगस्त, अंक: 03 | दादी प्रकाशमणि स्मृति विशेष

जीवन चला जाए पर खुशी नहीं जाए
दादी हृदयमोहिनी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, पेज 2 पर..

परमात्मा ने बताई अनेक जन्मों की कहानी.. पेज 2 पर

शिव-शक्तियों ने की 14 वर्ष घोर तपस्या... पेज 3 पर

सदा विश्व एक परिवार की भावना रही
दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू... पेज 3 पर

दादी ने संस्था को प्रकाश की तरह बढ़ाया
प्रतिभा देवीसिंह पाटिल, पूर्व राष्ट्रपति... पेज 4 पर

मैं हमेशा दादीजी को फालो करता हूं
भगवानदास राठी, न्यायाधीश, उच्च न्यायालय, मप्र.... पेज 4 पर

शांति का प्रकाश फैला रहा प्रकाश स्तंभ.... पेज 4 पर

विश्व बंधुत्व का मसीहा

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि एक ऐसी महिला थी जो सचमुच प्रकाश की पुंज थी। उन्होंने समाज की तमाम महिला विरोधी मान्यताओं को तोड़ते हुए नारी शक्ति की मिशाल कायम की। नारी के रूप में वे साक्षात् देवी और ममता की सागर थी। रूहानी शक्ति और मूल्यों से नारी को पोषित कर एक वैश्विक परिवार की डोर में बांधने का प्रयास किया। प्रस्तुत है एक विश्लेषण-

नारी शक्ति का एक जीता-जगता उदाहरण है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय। यह विश्व विद्यालय अपने स्थापना काल से ही देश को एक ऐसा नेतृत्व प्रदान करता आ रहा है जिसका इतिहास में कोई सानी नहीं है। 40-50 के दशक में जब महिलाओं को हेय की दृष्टि से देखा जाता था तब प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने कन्याओं और माताओं को आगे कर अध्यात्म की ज्योत जगाई और विश्व इतिहास में एक नए अध्याय की शुरुआत की। उन्होंने परमात्मा शिव बाबा की प्रेरणानुसार इन्हें हर गुण और कला से संपन्न बनाया। उन्होंने नारी शक्ति को आगे कर यह सिद्ध कर दिखाया कि महिलाएं भी किसी से कम नहीं हैं।

विश्व विद्यालय विश्व के सामने एक आदर्श

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय विश्व के सामने एक ऐसा आदर्श है जिसका नेतृत्व बहनों और माताओं के द्वारा किया जाता है। ये अपने कुशल नेतृत्व में विश्व को एक नई दिशा देने में सक्षम है। यहां से प्रशिक्षण प्राप्त कर महिलाएं विश्व और देश के हर कोने में एक चैतन्य मूर्ति की भांति विराजित हैं जो कि समाज के हर वर्ग को मूल्यनिष्ठ बनाने का कार्य रही हैं। वे अपनी सुख-सुविधा की परवाह न करते हुए वह एक ऐसे दैवी राज्य की स्थापना के कार्य में संलग्न हैं। जिसमें हर मानव देव स्वरूप विद्यमान हो। जिसका सपना महात्मा गांधी ने रामराज्य के रूप में देखा था। उन्होंने मानव को विकारों की अग्नि से निकालकर एक खुशनुमा जीवन जीने की कला सीखाई और मानव जीवन का सच्चा उद्देश्य बताया।

भारत के धार्मिक ग्रंथों को उलटकर देखें तो ऐसी एक नहीं अनेकों उदाहरण समाज के सामने है। यदि हम महापुरुषों की जीवनी को भी देखे तो उनकी प्रेरणास्रोत महिलाएं ही थी। इसलिए आज भी भारत में महिलाओं को देवी के समान स्थान दिया जाता है। जरूरत है तो उनसे प्रेरणा लेकर अपने जीवन को मूल्यनिष्ठ बनाने की।

लाखों भाई-बहनों की बदली जिंदगी

इनके दिशा-निर्देश में आज लाखों भाई-बहनें निरव्यसन जीवन जी रहे हैं। इस संस्था में एक नहीं ऐसी हजारों बहनें हैं जो कि अपने-अपने क्षेत्र का नेतृत्व कर रही हैं। इसका एकमात्र श्रेय परमपिता परमात्मा को जाता है, जिसके दिशा-निर्देश में यह संस्था कार्य रही है और मानव जीवन को मूल्यनिष्ठ बना रही है। भारत के प्राचीन गौरवशाली इतिहास के पन्नों को उलट कर देखें तो हम पाते हैं कि महिलाओं ने अग्रणी भूमिका अदा की है। चाहे वह लक्ष्मीबाई का उदाहरण हो या फिर कस्तूरबा गांधी का। जब भी जरूरत पड़ी इन्होंने विदेशी आक्रमणकारियों से दो-दो हाथ किए हैं और उन्हें अपनी शूर-वीरता का आभास कराया।

इनसेट: माउण्ट आबू में अरावली की सुरम्य पहाड़ियों के बीच ब्रह्माकुमारी बहनों को ईश्वरीय अनुभूति कराते हुए राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि।

दादी सबकी प्रेरणास्रोत बन गई

यह मेरा भाग्य है कि ऐसी महान हस्ती के सान्निध्य में रहने का अवसर मिला। मैंने दादी को बहुत करीब से देखा। ओम मंडली से लेकर संस्था की मुख्य प्रशासिका बनने तक लगातार दादी जी के जीवन में आध्यात्मिक उंचाईयां बढ़ती रही। संस्थान के मुख्यालय की जिम्मेवारियां को निभाती हुई दादी ने दुनिया में संस्था की शाखाओं का विस्तार किया। जहां भी उनके कदम पड़े, वहां ईश्वरीय सेवाओं के नए बीज अंकुरित होते हुए सेवा विस्तार को पाती रही। दादी भले ही बीमार होती, परन्तु उनके चेहरे से कभी भी एहसास नहीं हुआ कि वे किसी बीमारी से पीड़ित है। सर्व का सहयोग लेना, सबको अपनात्व का प्यार देना। यह उनके व्यक्तित्व में शामिल था। वे हमेशा ही परमात्मा की यादों में खोई रहती थी। संक्षेप में यही कहना चाहती हूं कि परमात्मा के सभी इशारों को अपने जीवन में उतारते हुए दादी सबकी प्रेरणास्रोत बन गई।

राजयोगिनी दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू

संस्था ने रचे नए कीर्तिमान

दादी जी के कुशल प्रबंधन, नेतृत्व से संस्था प्रगति-पथ पर निरंतर आगे बढ़ती गई और विश्व में कई कीर्तिमान स्थापित किए

दादी जी के कुशल प्रबंधन नेतृत्व से संस्था प्रगति-पथ पर निरंतर आगे बढ़ती गई और नए-नए कीर्तिमान स्थापित करती गई। जिसके फलस्वरूप प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को संयुक्त राष्ट्र संघ ने गैर सरकारी संस्था के तौर पर आर्थिक एवं सामाजिक परिषद का परामर्शक सदस्य बनाया जो कि युनिसेफ से भी सम्बद्ध है।

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की गई विशिष्ट सेवाओं के लिए 15 सितंबर 1997 को संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्यालय में दादीजी को अवर महासचिव मि. वेसीली एस. सैफ्रांचक अंतरराष्ट्रीय शांति दूत का पुरस्कार देते हुए।

अनेक संस्थाओं ने दिया सम्मान

वर्तमान समय की परिस्थितियों को भापते हुए संस्था ने दादी जी के कुशल नेतृत्व में विश्व-शांति के लिए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेकों कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया। जिसे देखकर अनेक संस्थाओं ने उन्हें भिन्न-भिन्न पुरस्कार देकर सम्मानित किया। संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1987 में ब्रह्माकुमारीज़ को अन्तर्राष्ट्रीय शांति पदक देकर सम्मानित किया। इसके साथ ही संस्था को पांच राष्ट्रीय स्तर के शांतिदूत पुरस्कार भी प्राप्त हुए।

पूरे विश्व में तोड़ी रंगभेद की दीवारें

दादी जी ने विभिन्न जाति, वर्ण, वर्ग, रंग-भेद को दूर करने के लिए विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक अनेकों यात्राएं की और सबको सुख, शांति और पवित्रता का संदेश दिया। दादी जी की वाणी विश्व में गूंजी और मानवता में विश्व-बंधुत्व की भावना का उदय हुआ। दादी जी के स्वरूप से लोगों को एहसास होने लगा कि अब सृष्टि परिवर्तन की घड़ी समीप आ गई है। इतिहास साक्षी है कि जीवन में जब-जब नैतिक मूल्यों का अभाव हुआ, तब-तब आध्यात्मिक शक्तियां जागृत हुई और सबको मानवता का संदेश देकर एकता के सूत्र में पिरोया है। दादी जी ने मात्र यात्राएं ही नहीं की, अपितु मानव को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने के अनेक मार्ग खोलें। जिससे मानव का सर्वांगीण विकास हो सके।

राजकीय सम्मान से सुशोभित हुई दादी

भारत के विभिन्न राज्यों के राज्यपालों ने दादी जी का राजकीय सम्मान राजभवनों में आयोजित कर स्वयं को गौरवन्वित महसूस किया। राजस्थान, उड़ीसा, कर्नाटक, गुजरात, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, चंड़ीगढ़ आदि राज्यों ने दादी जी का सम्मान राजकीय अतिथि के रूप में किया।

दादी जी के नेतृत्व में संस्था का दिव्य सफर

1954: ब्रह्माकुमारी संस्था का प्रतिनिधि मंडल दादी के नेतृत्व में द्वितीय विश्व धर्मसभा में भाग लेने जापान गया।

1956-61: मुम्बई के सेवाकेंद्रों की निदेशिका बनी।

1964: महाराष्ट्र जोन की निदेशिका बन ईश्वरीय सेवाओं में वृद्धि।

19665-68: महाराष्ट्र, गुजरात एवं कर्नाटक जोन की निदेशिका बनी।

1969: संस्था की मुख्य प्रशासिका नियुक्त हुई।

1972: दादी जी छ: सदस्यों के प्रतिनिधि मंडल के साथ विदेश सेवा पर गई और विभिन्न देशों में सेवाकेंद्रों की स्थापना की।

1976: डिवीनाइज द मैन कॉन्फ्रेंस का आयोजन मुम्बई में किया।

1978: वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस ऑन फ्यूचर मैनकाइंड का आयोजन।

1980: बैंगलोर विधानसभा के बेन्केट हॉल में वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस ऑन ह्यूमन सरवाइवल का आयोजन किया गया।

1981: संस्था को संयुक्त राष्ट्र संघ में गैर सरकारी संस्था के रूप में परामर्शदाता समिति का सदस्य मनोनीत किया गया। द ओरिजन ऑफ पीस कॉन्फ्रेंस का आयोजन नैरोबी में किया गया।

1982: सहयोगी संस्था के रूप में राजयोगा एज्युकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन की स्थापना की गई।

1983: प्रथम यूनिवर्सल पीस कॉन्फ्रेंस का आयोजन माउण्ट आबू में किया गया। उद्घाटन धर्मगुरु दलाई लामा ने किया।

1984: अमेरिका, ब्रिटेन और यूरोप सहित 13 देशों में दादी जी ने दौरा किया। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा संस्था को पीस मेडल से सम्मानित किया गया।

1985: तृतीय यूनिवर्सल पीस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1985 को ईयर ऑफ यूथ घोषित करने पर संस्था द्वारा भारत यूनिटी यूथ फेस्टिवल तथा युवा पद-यात्रा का आयोजन।

1986: संस्था का गोल्डन जुबली वर्ष मनाया गया। 88 देशों में मिलियन मिनट्स ऑफ पीस कार्यक्रम की लॉचिंग की गई।

1987: संस्था को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा पीस मैसेंजर अवार्ड प्रदान किया गया। संयुक्त राष्ट्र के सेक्रेटरी जनरल ने दादी को अवार्ड भेंट किया।

1988: ग्लोबल कोऑपरेशन फॉर ए बेटर वर्ल्ड नाम दो साल के अंतर्राष्ट्रीय प्रोजेक्ट की लॉचिंग। 122 देशों में कार्यक्रमों आयोजित

1989: अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस ग्लोबल कोऑपरेशन फॉर ए बेटर वर्ल्ड एवं ऑल इंडिया मोरल अवेकनिंग यूथ कैम्पेन का आयोजन।

1990: द्वितीय ग्लोबल कोऑपरेशन फॉर ए बेटर वर्ल्ड नामक अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का आयोजन। जिसका उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी के द्वारा किया गया। तृतीय इंटरनेशनल होलिस्टिक हेल्थ कॉन्फ्रेंस का आयोजन बेलगाम में एवं ऑल इंडिया एन्वायरमेंट अवेयरनेस केम्पेन का आयोजन

1991: लंदन में संस्था के ग्लोबल कोऑपरेशन हाउस तथा ग्लोबल हॉस्पिटल का उद्घाटन।

1992: दादी को मुम्बई के प्रियदर्शनी एकेडमी ने प्रियदर्शनी अवार्ड से सम्मानित किया गया। मोहनलाल सुखाड़िया यूनिवर्सिटी, उदयपुर द्वारा दादी जी को डाक्टरेट की उपाधि से नवाजा गया।

समाज की भलाई के लिए किया कार्य

दादी प्रकाशमणि ने सदा नि:स्वार्थ भावना से मानव और समाज की भलाई के लिए कार्य किया है। दादी ने देश की आध्यात्मिक विरासत को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। ब्रह्माकुमारीज़ लोगों को राह दिखाने तथा प्रेरणा देने का कार्य कर रही है।

सोनिया गांधी, कांग्रेस अध्यक्षा

जन-जन को दिया संदेश

दादी प्रकाशमणि ने ब्रह्माकुमारीज़ के माध्यम से भारतीय संस्कृति तथा जीवन मूल्यों के अनुरूप आध्यात्मिक चिंतन के माध्यम से विश्व शांति और सामाजिक समरसता जैसे श्रेष्ठ विचारों को जन-जन तक पहुंचाने का आजीवन प्रयास किया। दादी जी ने व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास पर विशेष बल देते हुए पारिवारिक और सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों की स्थापना को सर्वोच्च प्राथमिकता दी।

डॉ. रमनसिंह, मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

वह सहानुभूति आज भी मन में बसी है

मेरा यह परम सौभाग्य था कि मुझे दादी जी से मिलने का सुअवसर मिला। उनकी महिमा में जितने भी शब्द कहें जाए कम हैं। दादी जी सभी मानवमात्र के प्रति बंधुत्व की भावना रखती थी। दादीजी सभी से बहुत ही प्यार से मिलती थी। उनकी मानव मात्र के प्रति जो सहानुभूति देखने को मिलती थी वह आज भी हमारे मन में बसी हुई है और वह हमारे अंत:करण का हिस्सा बन गई है।

तरूण गोगई, मुख्यमंत्री, असम

सम्पूर्ण मानवजाति के लिए एक उदाहरण

दादी जी सम्पूर्ण मानवजाति के लिए एक उदाहरण हैं। दादीजी ने सदा अपने जीवन द्वारा दूसरों को प्रेरणा दी। उनका जीवन उच्च मानवीय मूल्यों से समाहित था।

प्रकाश सिंह बादल, मुख्यमंत्री, पंजाब

बचपन से था भक्तिभाव | **कभी किसी से डाट नहीं खाई**

मैं तो श्रीकृष्ण की मीरा बनूंगी: रमा

दादी जी के बचपन का नाम रमा था। कहा जाता है कि पूत के लक्षण पालने में ही दिखाई पड़ जाते हैं। इस कहावत को दादी ने बाल्यावस्था में चरितार्थ कर दिया था। रमा बचपन में श्रीकृष्ण की भक्त थी। सात-आठ वर्ष की उम्र से ही प्रतिदिन श्रीकृष्ण की पूजा करना उनकी दिनचर्या में शामिल था। उनके घर के पास में श्रीराधा-श्रीकृष्ण का मंदिर था। जहां वे सुबह-शाम पूजा करने जाती थी। रात के समय श्रीकृष्ण को झूले में झुलाती और फिर झूले से उठाकर पलंग पर सुलाती थी। यह उनका नित्य का नियम था।

रमा स्कूल में अपने सहपाठियों के साथ।

कभी किसी से नहीं खाई डाट

रमा बचपन से ही शांत और विनम्र स्वभाव की थी। बड़ों के प्रति हमेशा आदर भाव रखती थी। रमा में बचपन से ही दैवी संस्कार होने के कारण उन्होंने न कभी डाट खाई और न ही कभी किसी को अपशब्द कहे और न ही कभी सिनेमा देखने गई।

श्रीकृष्ण के दीदार की तीव्र इच्छा

रमा के पिता स्वामी गंगेश्वरानन्द के शिष्य थे। वे व्यापारी के साथ-साथ ज्योतिषी भी थे। जिसके कारण उन्हें मालूम था कि उनकी बेटी शादी नहीं करेगी और मीरा बनेगी। दादी को कभी भी फैशन का शौक नहीं था और वे बाजार की चीजें भी नहीं खाती थी। घर में छोटी होने के कारण लोग उन्हें बाहर घूमने के लिए कहते थे तो वे यही जवाब देती थी कि मेरा अभी मंदिर जाने का समय है। उन्होंने बचपन में ही यह स्लोगन पक्का कर लिया था कि - मांगने से मरना भला। उन्हें बचपन से बस दो ही बात की इच्छा थी कि या तो विष्णु या श्रीकृष्ण का दीदार हो। मैं तो श्रीकृष्ण की मीरा बनूंगी।

मेरी तीव्र लालसा थी कि श्रीकृष्ण का दीदार फिर से हो। दादी की एक सहेली थी जो कि ओम मंडली में प्रतिदिन जाती थी और जब वह योग में बैठती थी तो उसे देवी-देवताओं का साक्षात्कार होता था। उसने कहा कि चलो रमा मैं तुझे श्रीकृष्ण से मिलाती हूं। जबकि दादी का यह नियम था कि वह बिना माता-पिता के छुट्टी के वे घर से बाहर कदम नहीं रखती थी तो जब रात्रि में उनके पिता घर पर आए तो उसने पूछा कि मैं सत्संग में जाऊं पिताजी ने उन्हें सहज ही छुट्टी दे दी। जब अगले दिन दादी सत्संग में पहुंची तो देखा कि ब्रह्मा बाबा ओम की ध्वनि लगा रहे थे जो कि सुनने में बहुत ही अच्छा लग रहा था।

रमा को हुआ श्रीकृष्ण का दीदार

दादी बताती थी कि सन् 1936 को एक दिन सुबह जब मैं सोयी हुई थी, तभी अपने सामने एक सुंदर, बड़ा शाही बगीचा देखा। बगीचे में बहुत ही सुंदर-सुंदर लाइट चारों तरफ से लगी हुई थी और दूर-दूर तक बड़े-बड़े फूल-फल लगे हुए थे। उसके बीच में एक लाइट आई और उस लाइट के बीच में से छोटा-सा कृष्ण, बांसुरी लेकर, नाचता-कूदता मेरे समीप आया। उसके पीछे सफेद वेशधारी फरिश्ता खड़ा था। बचपन में हमने सुन रखा था कि भगवान बूढ़े वेश में आते हैं। जब श्रीकृष्ण के साथ सफेद वेशधारी फरिश्ता देखा तो मुझे ऐसा लगा जैसे भगवान सत्यनारायण को देख रही हूं। मुझे श्रीकृष्ण भी प्यारा लग रहा था और सत्यनारायण भी प्यारा लग रहा था।

सपने वाले सत्यनारायण भगवान जैसा है

जब दादी की दृष्टि बाबा के मस्तक पर पड़ी तो ऐसा लगा जैसे कि बाबा के मस्तक से लाइट निकल रही हो। तब दादी ने मन ही मन कहा कि यह तो बिल्कुल सत्यनारायण भगवान जैसा है। जिसे मैंने सपने में देखा था। इसी तरह सोचते-सोचते दादी ध्यान में चली गई। फिर उसे वही सपने वाला दृश्य दिखाई दिया। जब दादी ध्यान से वापस आयी तो उसने देखा कि बाबा दूसरे कमरे में जा चुके थे। जब दादी घर वापस आई तो वह बहुत ही बदल गई थी।

प्रतिदिन पढ़ती थी भागवत

रमा की बचपन से ही श्रीकृष्ण के प्रति अगाध आस्था थी और प्रतिदिन भागवत पढ़ती थी। सिंधी होने का कारण सुखमणि और ग्रंथ साहब भी पढ़ती थी। उस समय स्कूल में धर्म की एक क्लास होती थी। धर्म की क्लास में रमा नियमित रूप से उपस्थित रहती थी। उन्होंने जप साहेब, सुखमणि और गीता का बचपन में ही अध्ययन कर लिया था। वह अपनी स्कूली पढ़ाई के साथ नियमित रूप से धर्मग्रंथ भी जरूर पढ़ती थी।

बचपन से थी तीक्ष्णबुद्धि

रमा की बचपन से ही तीक्ष्णबुद्धि थी। उनकी बुद्धि इतनी विशाल थी कि जो भी एक बार पढ़ लेती थी वह उन्हें याद हो जाता था और कभी भूलती नहीं थी। रमा की प्रतिभा को देखते हुए शिक्षकों ने उन्हें तीसरी से छठीं क्लास तक साल में दो बार परीक्षाएं दिलवाई और हर छ: मास में दूसरे कक्षा में चली गई। रमा को परीक्षा में 75 से 80 प्रतिशत तक नंबर मिलते थे।

संपादकीय

ममता की मूरत को शक्ति स्वरूप बनते देखा

बीके करुणा

दुनिया में कई ऐसी घटनाएं होती है जो इतिहास के पन्नों में दर्ज हो जाती है। यही नहीं इनका अनुसरण युगों-युगों तक लोग करते हैं। भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति और देवी का रूप माना गया है। जबकि इसी भारत देश में नर्क का द्वार भी माना जाता रहा है। नारी एक शक्ति और प्रेरणा की पुंज है। यदि समृद्ध परिवार और समाज चाहिए तो उसका केन्द्र नारी है, जो पूरे परिवार को पालती है, चलाती और फिर आने वाली पीढ़ी को उच्च संस्कार देती है। मैंने तो अपनी आंखों से एक ऐसी महिला को नारी से शक्ति और ममता की मूरत में तब्दील होते देखा। पचास के दशक में जब महिलाएं अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत थी। साथ ही समाज में उन्हें अबला कहा जाता था। उस दौर में दादी प्रकाशमणि एक ऐसे अभियान और क्रांति की नायक बनी जिसका मार्ग अत्यन्त कठिन था, परन्तु असम्भव नहीं। उस दौर में ही उन लोगों के सामने यह साबित कर दिया कि महिला एक चारदीवारी में कैद रहने वाली नहीं, बल्कि एक शेरनी और शक्ति का पुंज भी है। धीरे-धीरे रूहानी पथ पर अग्रसर होते सशक्त रूहानी सेनानियों की लम्बी फेहरिस्त तैयार की। ऐसा नहीं था कि पुरुष प्रधान समाज में लोगों ने इसे सीधे-सीधे स्वीकार कर लिया। कई लांछन के साथ आरोप भी लगाए परन्तु दादी ने अपनी राह से बिना भटके दृढ़ता के पथ पर चलती रही। उनके निर्देशन में भारत सहित पूरे विश्व के कई देशों और अनेक संस्कृतियों के बन्धन टूटे और महिला से लेकर पुरुष तक अपने वास्तविक जिंदगी की ओर लौटे। दादी के नेतृत्व में गजब का प्यार, ममता और शक्ति के पुंज का समिश्रण था। जो कोई भी इनके सान्निध्य में आया वह बिना वक्त गंवाए मां के रूप में अंगीकार कर लिया। जिधर भी उनकी परछाई पड़ती वहां के कण-कण में शक्ति प्रवाहित होने लगती। परमात्मा के सान्निध्य में चलते दादी ने छोटी सी संस्था को वट वृक्ष की शक्ल दी। पूरी दुनिया से बुराईयों का अंत करने के लिए रूहानी सेना का नेतृत्व करते हुए 25 अगस्त, 2007 को इस दुनिया से विदा हो गई। आज वह भले ही हमारे बीच नहीं है परन्तु उनके ममता के आंचल और प्यार के पाव आज भी शक्ति प्रदान करते हैं। आज भी दादी प्रकाश पुंज के रूप में अपनी शक्तियां हम बच्चों पर लुटाती रहती है। दादी का नाम आते ही आज भी जेहन में पुरानी यादें ताजा हो जाती है और लगता है कि जैसे स्नेह की मूरत अव्यक्त होकर भी वरदानों से झोली भर रही है। दादी जी के इस महान कर्त्तव्य के लिए शत् शत् नमन.....।

कारवां बढ़ता गया, मंजिलें मिलती गई

ब्रह्मा बाबा की उपस्थिति में ज्ञान और अनुभव की स्थिति भिन्न थी। सब जानते हैं कि वे परमात्मा के माध्यम थे। उनके अव्यक्तहोने के बाद यह आशंका स्वाभाविक थी कि अब यह ज्ञान जानकारी में भले ही विस्तार पा जाए पर वह अनुभव जो बाबा के होते हुए होते थे और जो निश्चय उनके कारण होता था वह संभवत: कम हो या न हो। पर बाद के बरसों में यह सब एक अर्थ में गलत साबित हुआ। बाबा और परमात्मा दोनों की ही अव्यक्त पालना यज्ञ को मिलती रही और इस पालना की अनुभूति दादी प्रकाशमणि के माध्यम से ही होती रही।

मेरी कलम से

प्रो. कमल दीक्षित

दादी प्रकाशमणि का नाम आते ही एक ऐसी प्रेम और आत्मीयता की छवि उभरती है जो बरसों से स्मृति में बसी हुई है। यह मेरा ही अनुभव नहीं है। जो भी दादी से मिला है, उन सभी का यही अनुभव है। संभवत: यही वह गुण था जिसे बाबा ने जाना था और इस पूरे यज्ञ के विस्तार की बागडोर उनके हाथों में सौंपी थी।

यह भी एक अचरज भरा सत्य है कि ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होते समय यज्ञ की जो स्थिति थी, जितने जिज्ञासु इस ज्ञान से जुड़े थे, दादी की पालना और योजना से वह इतना विस्तार पा गया कि सारी दुनिया ने उसे शांति और सद्भाव का एकमात्र आध्यात्मिक संगठन स्वीकार किया। संयुक्त राष्ट्र ने उसे अपने साथ जोड़कर उसके माध्यम से हिंसामुक्त तनाव रहित और सद्भाव का समाज बनाने का माध्यम माना।

मीडिया से तो उनका विशेष स्नेह था। वे उन्हें शांति दूत कहती थी। वे मानती थी कि समाज का परिवर्तन मीडिया के सहयोग से तीव्रता से हो सकता है। यही तो वह समझ थी जिसके कारण इस संगठन ने प्रतिवर्ष मीडिया के दो सम्मेलन आयोजित करने का निश्चय किया जो भारत ही नहीं विश्व में कहीं भी नहीं होता है। मीडिया के लोग भी उनको मां जैसा सम्मान देते थे। एक मीडिया कॉंफ्रेंस में उन्होंने जब उपस्थित लोगों से शराब आदि छोड़ने को कहा था तब मैंने एक बड़े पत्रकार से उनकी प्रतिक्रिया जाननी चाही। उन्होंने कहा कि मेरी मां भी तो ऐसा कह देती है। मैं उनका कहा बुरा मानता हूं। यह उनके अपने आत्मीय प्रेम के प्रकंपन ही तो थे जो मीडिया के लोग लगातार जुड़ते चले गए और कारवां इतना बड़ा हो गया और समाज के पुनर्निर्माण में अपनी भूमिका तलाशने में जुट गया और अब भी जुटा हुआ है।

ब्रह्मा बाबा की उपस्थिति में ज्ञान और अनुभव की स्थिति भिन्न थी। सब जानते हैं कि वे परमात्मा के माध्यम थे। उनके अव्यक्त होने के बाद यह आशंका स्वाभाविक थी कि अब यह ज्ञान जानकारी में भले ही विस्तार पा जाए पर वह अनुभव जो बाबा के होते हुए होते थे और जो निश्चय उनके कारण होता था वह संभवत: कम हो या न हो। पर बाद के बरसों में यह सब एक अर्थ में गलत साबित हुआ। बाबा और परमात्मा दोनों की ही अव्यक्त पालना यज्ञ को मिलती रही और इस पालना की अनुभूति दादी प्रकाशमणि के माध्यम से ही होती रही। न तो ज्ञान का प्रकाश ही कम हुआ और न ही अनुभव का अहसास और आभास में कमी आई। यह सब उस अव्यक्त सत्ता का कमाल था तो साथ ही जो माध्यम था अब यानी दादी प्रकाशमणि उसके समर्पण और कल्याण भाव का भी तो परिणाम था।

दादी प्रकाशमणि ने अपने नाम के अनुरूप यज्ञ को ऐसा उजाला और उजाला दिया कि पूरी दुनिया ने उसे स्वीकार किया। ज्ञान के साथ ही साधन, माध्यम और संसाधनों का विस्तार होता चला गया। लोगों को यह स्पृहा होती थी कि एक आध्यात्मिक संस्था होते हुए भी यह संगठन अपने को तकनीक और आधुनिकता से क्यों जोड़ता जा रहा है। पर बाद के बरसों में न केवल इस ज्ञान से जुड़े लोगों ने वरन अन्य लोगों ने भी अनुभव किया कि समय के अनुरूप विस्तार न होने पर बहुत सी परम्पराओं का विकास नहीं हो पाया या उन्हें अपने को बनाए रखने के लिए उसी आधार को अपनाना पड़ा जिसकी वे आलोचना करती थी। यह भविष्य दृष्टि दादी प्रकाशमणि की ही थी। संभवत: उनकी इसी दृष्टि ने ब्रह्माकुमारीज को समय के साथ ही नहीं वरन आगे रखने में मदद की है। दादी का प्रेम अहैतुक और बिना शर्त के बरसता था। बाबा की तरह ही हर सेवाधारी और जिज्ञासु अपने को दादी के ममत्व और स्नेह को अपने लिए ही अनुभव करता रहा है। उनसे मिलना और उनके पास अपने को पूरी तरह से बिना आवरण के व्यक्त कर देना यह सामान्य सी बात थी। उतना ही यह कि हर कोई उनके लिए अपने को पूरा समर्पित कर देता था। दादी के रहते हुए जितने बड़े और विस्तृत कार्यक्रम और बड़े निर्माण कार्य हुए वे अपने आप में एक तरह का कीर्तिमान ही है।

एक लम्बे समय तक यूनिवर्सल पीस हॉल पूरे भारत में अपने ही तरह का भवन था। डायमंड हॉल बन जाने के बाद भी लोग यह मानते हैं कि ऐसा भवन अभी भी कहीं नहीं है। ग्लोबल अस्पताल भी अपने समय में एक ऐसे अभाव की पूत था जिसे विकास के बाद भी समाज बना नहीं पाया था। यह सब कुछ उनके समाज और व्यक्ति के कल्याण की कामनाओं के साथ जुड़े होने को ही स्पष्ट करता है।

ऐसी ममतामयी मां जो विश्व के कल्याण को व्यक्ति के कल्याण के रूप में देखने के साथ ही आजीवन एक निष्ठ होकर अपने कर्त्तव्य में समर्पण के साथ लगी रहीं उनको हम कैसे भूल सकते हैं। वे हमारे दिलों में धड़कन की तरह मौजूद हैं और रहेंगी।

लेखक: माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार
Email: kmldixit@gmail.com

जीवन चला जाए पर खुशी नहीं जाए

यदि कोई छोटी बहन दादी को आकर सुनाती थी कि आज मुझे बहुत रोना आया, फीलिंग आई आदि-आदि तो दादी कभी भी उसकी बात बड़ी बहन को सुनाकर उलाहना नहीं देती थीं कि तुमने छोटी बहन के साथ ऐसा-वैसा क्यों किया। हां, दादी जी उस छोटी बहन को ऐसा प्यार देती थीं जो उसके मन को पूरा ठीक कर देती थीं। पर बड़ी बहन को बुलाए, फिर कहे, तुमसे छोटी बहन नाराज है, क्या करती हो, कभी नहीं। दादी क्लास कराती थीं, सब कायदे-कानून समझाती थीं, पर व्यक्तिगत मिलन में सीधा नहीं कहती थीं कि तुमने ऐसा किया है। इस प्रकार, दादी भी दिल में कुछ नहीं रखती थीं। क्योंकि दिल में कोई भी बात घर कर जाए तो खुशी गुम हो जाती है। जीवन भले जाए पर खुशी न जाए। मैं कोई भी बात दिल में नहीं रखती थी। दादी के गुणों की महिमा जितनी की जाए कम है। मुझे बचपन से ही दादी के अंग-संग रहने का मौका मिला जो मेरा भाग्य है। दादी का दिल इतना बड़ा था कि हजारों आत्माएं भी हो तो भी दादी सभी से हालचाल पूछती और ख्याल रखती।

दादी हृदयमोहिनी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़ माउण्ट आबू

परमात्मा ने बताई अनेक जन्मों की कहानी

ब्रह्माकुमारीज़ का इतिहास जानने से पहले हमें प्रजापिता ब्रह्मा के जीवन कहानी को जानना बहुत ही आवश्यक होगा, क्योंकि ये ही वे युग पुरुष हैं जिनके तन का आधार परमात्मा शिव ने लिया और विश्व परिवर्तन की आधार शिला रखी। शिव ने दिव्य दृष्टि देकर उन्हें उस युग का साक्षात्कार कराया जिसका उन्हें निर्माण करना था। साथ ही दादा लेखराज को उनके अनेक जन्मों की कहानी बताई।

हम जिस असाधारण मनुष्य की जीवन कहानी का यहां उल्लेख कर रहे हैं उन्हें लोग स्नेह से दादा कहते थे। जब परमपिता परमात्मा ने उनके तन का आधार लिया तो उनका कर्त्तव्य वाचक नाम दिया - 'प्रजापिता ब्रह्मा' रखा। परमात्मा त्रिकालदर्शी और सर्वज्ञ हैं उन्होंने करोड़ों मुनष्यों में से उस मनुष्य को चुनकर उसके तन में प्रवेश किया तो इसके पीछे अवश्य ही कोई कारण रहे होंगे। परमात्मा ने दादा के तन का आधार लेने के पश्चात् उस विशिष्ट पुरुष की अनेक जन्मों की कहानी बताई। जिससे स्पष्ट होता है कि वह सचमुच में एक अद्‌भुत व्यक्ति थे।

हर कोई करता अपनेपन का अनुभव

जिन्हें लोग स्नेह से दादा कहते थे। उनका पूरा नाम दादा लेखराज था। उनके व्यक्तित्व और स्वभाव को देखने से भी ऐसा प्रतीत होता था जैसे कि साधारण मनुष्य तन में श्री नारायण स्वयं साकार हुए हैं। सूरत और सीरत दोनों का सुंदर होना यह किसी देव-तुल्य मानव के ही भाग्य में होता है। उनके व्यक्तित्व में ऐसा चुम्बकीय आकर्षण था कि जो भी उनके संबंध-सम्पर्क में आता था वह उनसे स्नेह और अपनात्व का ही अनुभव करता था। उनका मुखमंडल दिव्य कांति से दैदीप्यमान था और उनके नेत्रों में देखने से ऐसा लगता था कि जैसे उनमें सारे संसार के लिए स्नेह और सौहार्द्र की भावना छलक रही हो।

बचपन से ही था नम्र स्वभाव

दादा लेखराज का जन्म सन् 1876 में सिंध के कृपलानी परिवार में एक वल्लभाचारी भक्त के यहां हुआ। उनके पिता एक स्कूल में प्रधानाध्यापक थे। लेखराज की माता की भगवान के प्रति अगाध आस्था थी और उनका अधिकांश समय भक्तिभाव में ही बीतता था। पिता भी नम्र स्वभाव, उच्च आदर्शवान और दानशीन थे। लेखराज में बचपन से ही अपने पिता की तरह कुशाग्र बुद्धि, नम्र स्वभाव, उच्च संस्कार, दानशीनलता, भक्तिभाव और सदाचार के गुण विद्यमान थे।

पत्र लेखन में थी कुशलता

औपचारिक रीति से दादा ने बहुत ऊंची शिक्षा प्राप्त नहीं की थी. परंतु उन्हें सिंधी लिपि और गुरुमुखी का अच्छा ज्ञान था। वे हिन्दी के धर्म-ग्रंथों का सहज ही अध्ययन कर लेते थे। दादा गुरुमुखी में ग्रंथ साहिब अच्छी तरह समझ लेते थे और अंग्रेजी के समाचार-पत्रों को पढ़ा करते थे। उन्हें पत्र लिखने में विशेष कुशलता प्राप्त थी और अच्छे साहित्य एवं कला की पैनी पहचान थी। अपने व्यापारिक जीवन में भी वे अपनी ही सूझ-बूझ से जेवरों के नए-नए डिजाइन बनाते थे। वे इस कार्य में किसी की नकल न करते थे।

राजा भी करते थे विशेष सम्मान

दादा अपनी बुद्धि और पुरुषार्थ द्वारा गेहूं के एक छोटे से व्यापारी से प्रसिद्ध जौहरी बन गए थे। उन्हें हीरे-जवाहरातों की अचूक परख थी। अपनी इस परख शक्ति, मिलनसार स्वभाव और व्यापार में ईमानदारी के कारण वे राजाओं-महाराजाओं, धनाढ्य व्यक्तियों तथा तत्कालीन वाईसराय आदि में वे काफी प्रसिद्ध थे। नेपाल तथा उदयपुर के महाराजा का भी उन्हें विशेष आतिथ्य और स्नेह-सम्मान प्राप्त था और वे उनके राज दरबार में भी आमंत्रित होते थे। कई बार तो राजा लोग उन्हें कहते थे - लखीराम बाबू, भगवान से तो भूल हो गई कि हमको तो राजा बनाया परंतु आपको नहीं बनाया, राजापन के सभी संस्कार तो आप में हैं। परंतु वास्तव में भगवान ने भूल नहीं की थी, क्योंकि वे राजे तो एक ताज वाले राजा थे जबकि भगवान ने दादा को तो दो ताज वाला दैवी राजा बनने का पुरुषार्थ कराया।

'गुरु का बुलावा गोया काल का बुलावा'

एक बार की बात है उनके गुरु अपनी बहुत बड़ी शिष्य-मंडली को लेकर दादा के घर आए। दादा ने बहुत ही आदर से उनका स्वागत किया। उनमें गुरु भक्ति इतनी थी कि उन्होंने गुलाब जल की बोतलों की कई पेटियां मंगवाई। जिसे प्रात: और सायं दोनों समय छिड़का जाता था। फिर इसके पश्चात् अगरबत्ती जलाई जाती थी। वे गुरु की हर आज्ञा को हर हालत में शिरोधार्य मानते थे। चाहे कुछ भी घटित क्यों न हो जाएं, लेकिन वो गुरु की आज्ञा नहीं टालते थे। इसका पता इस घटना से चलता है कि एक बार उनके पोते का नामकरण संस्कार होना था। सायंकाल का समय था उस समय शहर के बड़े-बड़े व्यक्ति भोज के लिए उपस्थित थे। अचानक ही गुरु का तार आया कि तुरंत आओ। दादा ने अपनी पत्नी को कहा कि तुरंत कपड़े निकालो और ड्राइवर को बुलाओ क्योंकि मुझे जाना है। तब उनकी पत्नी ने कहा कि इस अवसर पर कैसे जा सकते हैं। तब दादा ने बहुत ही गुह्य उत्तर दिया और कहा कि गुरु का बुलावा गोया काल का बुलावा है। काल आए तो क्या हम उसे ऐसा कहकर रोक सकते हैं कि आज हमारे पोते का नामकरण है। गुरु के प्रति ऐसी निष्ठा, भक्ति और सम्मान देखकर वहां उपस्थित लोग आश्चर्यचकित रह गए।

अचानक मनोवृत्ति हो गई उपराम

जब दादा की आयु साठ वर्ष की हुई तो उनकी पत्नी जिनका नाम जसोदा था ने कहा कि अब हमें वानप्रस्थ होकर किसी एकांत स्थान पर बैठ जाना चाहिए। तब दादा ने उन्हें कहा - अभी ठहरो, अभी तो हमने इतने लाख रुपया ही कमाया है, अभी तो और कमा लेने दो, फिर हम वानप्रस्थी हो जाएंगे। उनका मानना था कि अभी हम दो-चार वर्ष तक और धन कमा ले फिर खूब दानपुण्य करेगें और जीवन के बाकी दिन निराधार होकर भक्ति में गुजारेंगे। परंतु कहा जाता है कि नर सोचता कुछ और है, और भगवान कुछ और...। अनायास ही किसी ईश्वरीय योजना के अनुसार दादा की मनोवृत्ति संसार से उपराम हो गई और उन्हें अंतर्मुखता का अनुभव होने लगा। वे हमेशा किसी मनन-चिंतन में मग्न रहने लगे।

ब्रह्मा बाबा के साथ दादी प्रकाशमणि।

सृष्टि के महाविनाश का दिव्य साक्षात्कार

विष्णु चतुर्भुज के साक्षात्कार के कुछ समय के बाद दादा वाराणसी में चले गए। वहां एकांत में बैठकर जब वे प्रभु-चिंतन किया करते थे, तब उन्हें नित्य नए-नए अनुभव और कई दिव्य साक्षात्कार होने लगे। तब दादा ने अपने घर में एक पत्र लिखा कि खजाना बहुत है, पा रहा हूं, पा रहा हूं, चाबी मिल गई, पा लिया, पा लिया... इस प्रकार उन्होंने कई पत्र अपने घर में लिखे। एक दिन दादा को निराकार ज्योतिर्लिंगम् परमपिता परमात्मा शिव का तथा कलियुगी सृष्टि के महाविनाश का भी साक्षात्कार हुआ। दादा ने देखा कि बहुत ही भयंकर बम बनाए गए हैं। उनके विस्फोट से असह्य अग्नि निकल रही है। उन्हें आभास हुआ कि यह 5000 वर्ष पहले महाभारत युद्ध में जिन अस्त्रों का प्रयोग हुआ था और जिन्हें महाभारत ग्रंथ में अग्नि बाण, ब्रह्मास्त्र और मूसल कहा गया है, ये वही अस्त्र-शस्त्र हैं और इन्हीं के द्वारा लोगों का महाविनाश हो रहा है। जिन दिनों उन्हें यह साक्षात्कार हुआ, उस समय तक अमरीका ने एटम और हाईड्रोजन बम हिरोशिमा और नागासाकी पर नहीं फेंके थे, बल्कि तब वैज्ञानिक प्रयोगशाला में उस पर रिसर्च ही कर रहे थे।

सबसे पहले विष्णु चतुर्भुज का दिव्य साक्षात्कार

एक दिन ऐसा आया कि जब वे मुम्बई में बबुलनाथ मंदिर के सामने वाले अपने घर के विशाल आंगन में हो रहे सत्संग में बैठे थे, तो उन्हें एक निराला ही आंतरिक अनुभव होने लगा। वे सत्संग के स्थान से उठकर अपने कमरे में चले गए। वहां बैठे हुए वे एक अलौकिक नशा-सा अनुभव कर रहे थे। उन्हें शरीर का भान नहीं था। उस अवस्था में उन्हें सबसे पहले विष्णु चतुर्भुज का दिव्य साक्षात्कार हुआ। दादा ने सोचा कि गुरु ने ही ये साक्षात्कार करवाएं होंगे। इसलिए उन्होंने अपने गुरु के पास जाकर बहुत खुशी से यह सब वृत्तांत सुनाया। परंतु गुरु के हाव-भाव से उन्होंने समझा कि गुरु इन बातों से बिल्कुल ही अपरिचित हैं और दिव्य साक्षात्कार कराना उनकी सामर्थ्य से बिल्कुल बाहर की बात है। अत: उनका मन अब परमपिता परमात्मा की ओर मुड़ा जो ही वास्तव में सबका सद्‌गुरु है। दादा के मन में यह निश्चय हो गया कि दिव्य दृष्टि और दिव्य बुद्धि का दाता केवल परमात्मा ही है और उस एक ही को सच्चा गुरु मानना चाहिए। उस घटना के बाद दादा का सारा जीवन ही बदल गया और इस संसार से मनोवृत्ति उपराम हो गई।

...और व्यापार लगने लगा झूठ

हीरे जवाहरात के व्यापारी दादा लेखराज ।

भविष्य में होने वाले महाविनाश को देखकर दादा का मन अब अपने व्यवसाय से उठ चुका था। अत: उसे समेटने के लिए वे वहां से कलकत्ता गए। उन्हें अब सब हीरे पत्थर की तरह दिखाई देने लगे। वह बोले, यह तो झूठा व्यापार है। उन्होंने अपने भागीदार से कहा - अब हमें छुट्टी दो। उन्होंने सोचा कि पता नहीं वे कितना हिस्सा मागेंगे परंतु दादा ने उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा कि मैं किसी मतभेद के कारण नहीं जा रहा हूं बल्कि इसलिए जाना चाहता हूं कि मुझे अब यह धन्धा झूठा लगने लगा है। मुझे ईश्वरीय प्रेरणा आई है कि निकट भविष्य में कलियुगी सृष्टि का महाविनाश होना है। अत: मुझे अब यह धन ईश्वरीय सेवा में लगाना है। मैं अभी बैठकर आपसे कोई हिसाब-किताब नहीं करूंगा। आप बाद में अपने वकील द्वारा, जैसे भी ठीक समझो, हिसाब करा देना।

हर कर्म में भक्ति की झलक

दादा में भक्ति के संस्कार इतने पक्के थे कि चाहे कैसा भी अवसर क्यों न हो, उनके कर्मों में भक्ति की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी। शादी-विवाह के अवसर पर वे नवदंपती को श्रीमद्‌भगवदगीता तथा चांदी का एक सुंदर मंदिर विशेष रूप से सौगात में भेंट किया करते थे। जिससे कि वर और वधू दोनों के जीवन में भक्ति-भावना बनी रहे। वे शादी के अवसरों पर भी अपने गुरु को आमंत्रित कर लिया करते थे और शादी को एक सत्संग का रूप दे देते थे अर्थात् वे उस अवसर को भी धार्मिक बना देते थे तथा उसे निराले ढंग से सम्पन्न करते थे। विवाह तो ऐसा लगता था कि जैसे कलियुग में किसी देवी और देवता का विवाह हो रहा हो। इस प्रकार उनके यहां के कार्यक्रमों में सांसारिकता देखने को नहीं मिलती थी।

दादा की गीता में थी अनन्य श्रद्धा

दादा का भक्ति-भाव इतना परिपक्व था कि व्यापार या घर की कैसी भी परिस्थिति हो, वे एक दिन भी भक्ति और पाठ के नित्य नियम से नहीं चूकते थे। चाहे वे रेल-यात्रा कर रहे हों तो भी वे श्रीमद्‌भगवदगीता का पाठ अवश्य करते थे, क्योंकि गीता में उनकी अनन्य श्रद्धा थी। जिन राजा-महाराजाओं तथा धनाढ्य व्यक्तियों के साथ दादा का हीरे-जवाहरात का व्यापार था, वे कई बार उनके यहां अतिथि बनकर आते और उनकी गाड़ी के पहुंचने का समय कई बार वहीं होता था। परंतु फिर भी दादा भक्ति और पाठ को नहीं छोड़ते थे।

खानपान था सात्विक

दादा का खान-पान और रहन-सहन सात्विक था। जब कभी वे मित्रों को भोज या पार्टी देते तो उसमें सिगरेट, शराब आदि की गंध भी नहीं होती थी। दादा द्वारा दिए गए भोज में सम्मिलित होने वाले राजा तथा रईस लोग कई बार सिगरेट, शराब आदि को न पाकर विनोदपूर्ण लहजें में कहते - दादा, पार्टी फीकी रही। परंतु दादा मुस्कराते हुए उत्तर देते - आपके लिए हम अपना धर्म थोड़े ही भ्रष्ट करेंगे। आप तो हमें कागज के नोट देते हैं, परंतु हम तो उनके बदले में आपको हीरे देते हैं।

दादा को अमरनाथ, हरिद्वार, प्रयाग, वृंदावन, काशी आदि की यात्रा में विशेष रूचि थी और साधु-संन्यासियों को अपने यहां ठहराने में उन्हें बहुत खुशी होती थी। अपने लौकिक गुरु में उनकी बड़ी श्रद्धा थी और उनके स्वागत, सत्संग तथा आतिथ्य पर वे हजारों रुपया खर्च कर देते थे।

श्री नारायण के अनन्य भक्त थे

दादा बाल्यकाल से ही श्री नारायण के अनन्य भक्त थे। श्री नारायण की स्मृति उन्हें इतनी प्रिय थी कि वे अपने पूजा-पाठ के कक्ष के अतिरिक्त श्री नारायण का चित्र अपने शयनागार में और अपने सिरहाने के नीचे भी रखते थे। उनकी तिजोरी और जेब में भी श्री नारायण का चित्र रखा रहता था। बाजार में जो श्री नारायण के छपे हुए चित्र प्राय: मिलते थे, उनमें श्री नारायण को लेटे हुए और श्री लक्ष्मी को उनके चरणों की दासी के तौर पर पांव दबाते हुए चित्रित किया हुआ होता है। उन्हें ये चित्र पसंद न थे क्योंकि वे इस चित्र को ऐसे समाज का प्रतीक मानते थे जिसमें स्त्री को गौण, दासी-जैसा अथवा तिरस्कार-युक्त स्थान दिया जाता हो। इसलिए वे चित्रकार से ऐसा चित्र बनवा लेते थे। जिसमें कि लक्ष्मी का दासी-भाव अंकित न हो।

पाठक पीठ

शिव आमंत्रण में ज्ञान को जितना स्पष्ट तरीके से प्रकाश डाला गया है उतना अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। अनेक धर्मशास्त्र पढ़ने के उपरांत भी कई संशय बने रहते हैं, किंतु शिव आमंत्रण सारे संशयों को मिटाने वाला है। मुझे वीआईपी के अनुभव पढ़कर बहुत प्रेरणा मिली। यह पेपर ज्ञान को बहुत ही गहराई से स्पष्ट करता है।

बालमुकन्द काबरा, चार्टर्ड एकाउण्टेंट, भीलवड़ा, राजस्थान

आज तक हमारा यह विश्वास था कि मनुष्य 84 लाख योनियों में जन्म लेता है। इसके पश्चात् ही उसे पुन: मानव शरीर मिलता है। लेकिन शिव आमंत्रण में 'मनुष्यात्मा पशु योनि में जन्म नहीं लेती' लेख पढ़कर हमें सत्य का ज्ञान हुआ कि मनुष्यात्मा पशु योनि में जन्म नहीं लेती है और सिर्फ मनुष्य योनि में ही जन्म लेती है। उसे अपने कर्मों के अनुसार ही शरीर मिलता है।

अनुप शर्मा, शिमला

आज तक मैं भगवान को कण-कण में मानता था। लेकिन आमंत्रण पेपर में 'कहां है परमपिता परमात्मा शिव का निवास स्थान?' लेख पढ़ने से हमारी यह भ्रांति दूर हो गई। सचमुच में यह न्यूज पेपर अनमोल है।

सुमित शर्मा, इलाहाबाद

आज तक हमें तो छोटे-छोटे निमंत्रण कार्ड मिलते थे, लेकिन जब शिव आमंत्रण मुझे मिला तो मुझे ऐसा लगा कि इतना बड़ा आमंत्रण भगवान के सिवाय और किसी का हो ही नहीं सकता है। अब इसकी मुझे हर समय प्रतीक्षा रहती है।

व्यवसायी, कांगड़ा

शिव आमंत्रण को मैंने जब पहली बार इंटरनेट पर देखा तो मेरा रोम-रोम पुलकित हो गया। इसे देखकर मेरे मन में सेवा के नए-नए प्लान आने लगे। इससे जो सेवा बाबा ने कराई वह तो बहुत ही कमाल की थी।

पार्थ भाई, बद्दी, हिमाचल प्रदेश

शिव आमंत्रण का मुझे तीसरा अंक मिला। इसमें आत्मा का ज्ञान पढ़कर अच्छा लगा। हमें पहली बार आत्मा के सम्बन्ध इतना स्पष्ट जानकारी मिली है। इसे हमने अपने कई दोस्तों के साथ शेयर किया।

वंदना बहन, बद्दी, हिमाचल प्रदेश

मैनें शिव आमंत्रण को फेसबुक पर पढ़ा। इसके पश्चात् हमने अपने अनुभव कई दोस्तों के साथ बांटा। उन्हें भी यह पढ़कर अच्छा लगा। वे कहते हैं कि ऐसा न्यूज पेपर हमने आज नहीं पढ़ा। इसका प्रत्येक लेख अद्‌भुत है।

देशमुख, विदिशा, मध्यप्रदेश

पहले हमारे घर में परिवार के सदस्य ब्रह्माकुमारीज़ के नाम से ही चिढ़ते थे, लेकिन शिव आमंत्रण पेपर को पढ़ने के बाद सभी के विचारों में सकारात्मकता आई और अब सभी सदस्य लगन से यह पेपर पढ़ते और भगवान की महिमा करते नहीं थकते हैं।

विकास कुमार, बैंगलोर

प्रतिक्रिया एवं सुझाव

यह अंक आपको कैसा लगा, कृपया आप अपनी प्रतिक्रिया एवं सुझाव निम्न पते पर भेंजे। प्रकाशन योग्य होने पर इसे प्रकाशित किया जायेगा।

पता: ब्रह्माकुमारीज़, मीडिया विंग एण्ड पब्लिक रिलेशन ऑफिस, शांतिवन, आबूरोड जिला - सिरोही, राजस्थान, पिन कोड: 307510 (फोन: 02974-228230)
Email- shivamantran.media@gmail.com

रूहानी सेना की नायिका

दादी प्रकाशमणि ने अपनी नजरों में परमात्मा को इस कदर बसा लिया था कि चाहे बच्चा हो या बूढ़ा, अमीर हो या गरीब सभी के प्रति समभाव एवं सद्भावना की दृष्टि उनके जीवन का महत्वपूर्ण ध्येय बन गया था। यही वजह थी कि दादी दुनिया के जिस कोने में भी गई लोगों ने उन्हें 'दादी मां' की संज्ञा दी। दादी लगातार पूरी दुनिया में आपसी मतभेद एवं कटुता को समाप्त कर एकता के सूत्र में पिरोने का प्रयास करती रही। उनकी नजरों में इतनी शक्ति थी कि वह कौड़ी को भी हीरे जैसा बना देती।

जहां आज पारिवारिक ढांचा बिखर रहा है। वहीं यह संस्थान पूरे विश्व को यह संदेश दे रहा है कि यदि मानवीय मूल्यों को जीवन में उतार ले तो पूरा मानव जगत एक परिवार बन जाएगा। इन्हीं मानवीय मूल्यों के सहारे संस्था आज भी अपने मकसद में कामयाबी की निरंतर सीढ़िया चढ़ रही है। इसलिए लोग आज लाखों की तादाद में इस अभियान को देखने, समझने एवं अपने जीवन में उतारने के लिए सहज ही खिंचे चले आते हैं।

चाहे व्यावसायिक हो या प्रशासनिक, शैक्षणिक हो या राजशाही सभी अपने-अपने क्षेत्रों में इसे लाने के लिए इस संस्था के साथ भागीदारी निभा रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में तो और भी कई कीर्तिमान स्थापित हो रहे है। जो कि सराहनीय है।

एक सूत्र में पिरोता था दादी का वात्सल्य

सदा विश्व एक परिवार की भावना रही

ओम निवास में जो भी छोटी-छोटी कुमारियां थी तो उनकी संभाल करने की जिम्मेवारी भी बाबा ने दादी जी को ही दी थी। दादी का पार्ट शुरू से ही बाबा के साथ यज्ञ सेवा में सहयोगी बनने का रहा है। बाबा अपनी जिम्मेवारियां दादीजी को दिया करते थे। साथ-साथ उनको सिखा भी देते थे तो उनके अंदर भी बाबा जैसे ही कार्य करने की शक्ति आ गई थी। सदा विश्व एक परिवार की भावना थी। सबके प्रति अपनापन होने के कारण सभी को दादी के प्रति अपनापन आता था और सभी समझते थे कि दादी हमारी है। मधुबन आने वालों के लिए ठीक प्रबंध करना- देखना यह सब दादी खुद करती थीं। दादी ने भी बाबा जैसी पालना सबको दी और भगवान के गुणों को भी अपने में धारण किया।

दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज, माउण्ट आबू

हर किसी की खास थी दादी

मैनें दादीजी को हमेशा करीब महसूस किया। दादीजी के सान्निध्य में कोई भी आता दादी उसे दैवी परिवार की भासना दिलाती थी और हर कोई दादीजी को अपना खास समझता था। उन्होंने कभी किसी के अंदर अवगुण नहीं देखा। वह विशेषताओं को देख उसका ही वर्णन करती। वह ईश्वरीय परिवार का शानदार नेतृत्व करती थी। दादीजी पूर्णत: अहंकार से मुक्त थी।

ब्रह्माकुमार ब्रजमोहन, प्रधान संपादक, प्युरिटी मैगेजिन, दिल्ली

कथनी-करनी थी एक समान

मैं अपने-आप को भाग्यशाली समझती हूं कि दादी जैसी महान आत्मा के अंग-संग रहने का मौका मिला। मैं दादी के साथ आलराउंडर बन गई और हर सेवा में दक्ष बनती गई। दादी का सभी के साथ निश्चल प्यार, अटूट भावना, सेवा में समर्पण, हां जी का पाठ और एक बाप दूसरा न कोई की दृढ़ धारणा का पाठ सीखा। दादी कोई भी बात हम लोगों को कहने से पहले अपने आचरण में लाती थी। दादी की कथनी-करनी एक समान थी। दादी हमेशा कहती थी सिम्पल बनो,सैम्पल बनो।

ब्रह्माकुमारी मोहिनी, अध्यक्षा, ग्राम विकास प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज, माउण्ट आबू

... सारी थकान हो जाती थी दूर

जब मैं सोलह वर्ष की थी तभी इस वरदान भूमि में आई। दादी ने मुझे उत्तरदायित्व भरे कार्य में व्यवस्थित कर दिया। दादी मात्र कार्य ही नहीं सौंपती, साथ ही कार्यक्षमता और कार्य करने की कला भी अपनी ओजस्वी वाणी के माध्यम से सौंप देती थी। उनकी प्यार भरी दृष्टि पड़ते ही मेरे अंदर उमंग-उत्साह आ जाता और सारी थकान दूर हो जाती। आज तक थकान किसे कहते हैं, मैंने नहीं जाना, ऐसा लगता था ये नजरें दादी की नहीं, भगवान की हैं। वह ही मुझे नजर से निहाल कर रही है।

ब्रह्माकुमारी मुन्नी, कार्यक्रम प्रबंधक, ब्रह्माकुमारीज, माउण्ट आबू

जीवन में स्नेह व शक्ति का अद्भुत संतुलन था

दादी जी सदैव कल्याणी स्वरूप का अनुभव कराती थी। उनके जीवन में स्नेह व शक्ति का अद्भुत संतुलन देखने को मिलता था। लोग जहां भगवान के घर पर खुले हृदय से स्वागत पाते हुए ईश्वरीय परिवार की अनुभूति करते हैं, वहीं यदि नियमों का उल्लंघन करते तो दादी कहती कि मुझे कोई एतराज नहीं है परंतु आप दूसरों के लिए अच्छे आदर्श नहीं बन सकते।

ब्रह्माकुमारी मोहिनी, निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज, यूएसए

विशेष आभा मण्डल से सम्पन्न थी

दादी जी विशेष आभा मण्डल से सम्पन्न थी। उनकी शीतलता का अनुभव हर परिस्थितियों के दावानल में जलता हुआ मानव कर सकता है। एक बार 1977 में दादी जी विदेश यात्रा में थीं, तभी एक दु:खी आत्मा दादी जी के सम्मुख आई और शांति की याचना करने लगी। उसे देखकर दादी जी ने शांति की तरंगों द्वारा उसे कुछ पलों में ही शांति से सम्पन्न कर दिया।

ब्रह्माकुमारी जयंती, निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज, यूरोप

आंतरिक शक्तियों को पहचानने की अद्भुत शक्ति थी

दादी ने प्रशासनिक क्षेत्र में आध्यात्मिक गुणों एवं शक्तियों का प्रयोग करके सम्पूर्ण विश्व को एक अनमोल उपहार दिया है। दादी में प्रत्येक मनुष्यात्मा में छिपी आंतरिक शक्तियों को पहचानने की अद्भुत शक्ति थी। वे पत्थर को पारस में बदलने की दिव्य कला की साक्षात अवतार थी। दादी जी के सान्निध्य में आने से जिम्मेवारियों का बोझ जैसे छूमंतर हो जाता था। व्यस्तता के बीच सहज रहने की कला मैंने दादी जी से सीखी।

ब्रह्माकुमारी सुरेन्द्र, सबजोन इंचार्ज ब्रह्माकुमारीज, वाराणसी एवं पश्चिमी नेपाल क्षेत्र, सारनाथ

दिव्य स्नेह से सबका मन जीत लेती थीं

दादी जी स्नेह स्वरूपा थीं। वे अपने दिव्य स्नेह से सबका मन जीत लेती थीं। वे किसी भी कार्य को असंभव नहीं समझती थी और न ही समझने देती थी। दादी का कहना था कि अलौकिक, नि:स्वार्थ, रूहानी स्नेह प्रशासन की सर्वोच्च विधि है। इसके साथ दादी जी एक आदर्श शिक्षिका भी थीं। उन्होंने यह सिखाया है कि आदर्श शिक्षिका वही है जो अव्यभिचारी बुद्धि वाली, निर्मोही, पढ़ाई में प्रवीण एवं आलराउण्डर हो। यज्ञ से प्रीतबुद्धि, आज्ञाकारी, वफादार, फरमानबरदार, ईमानदार और मर्यादाओं का पालन करने वाली बहन ही आदर्श शिक्षिका हो सकती है।

ब्रह्माकुमारी आशा, निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज, ओ.आर.सी, गुड़गांव

दादी में अद्भुत परख शक्ति थी

दादी से जो भी मिलता संतुष्ट होकर जाता। दादी में परख शक्ति अद्भुत थी। किस व्यक्ति में क्या विशेषता है और उसे किस कार्य में लगाना है यह दादी की विशेषता थी। दादी हम बहनों से ऐसे मिलती जैसे सखी हो और हम उम्र की तरह हर बात शेयर करती। दादी से मां का स्नेह पाकर मन की सारी चिंताएं, द्वंद समाप्त हो जाते।

ब्रह्माकुमारी संतोष, जोन इंचार्ज, ब्रह्माकुमारीज, महाराष्ट्र जोन, मुम्बई

जो कर्म मैं करूंगी, मुझे देख सब करेंगे

कारोबार में दादीजी स्वयं पहला कदम रखती थीं। उनका नारा था जो कर्म मैं करूंगी, मुझे देख सब करेंगे। दादी यज्ञ की प्रत्येक वस्तु का ध्यान रखती थी कि कोई वस्तु कहीं वेस्ट तो नहीं पड़ी है, कहीं कोई नुकसान तो नहीं हो रहा है व यज्ञ की चारों ओर साफ-सफाई ठीक है। दादी प्रत्येक यज्ञ वत्स की मानसिक व शारीरिक स्थिति का भी पूरा ध्यान रखती थीं।

ब्रह्माकुमार भूपाल, प्रबंधक, ब्रह्माकुमारीज, शांतिवन

शिव-शक्तियों ने की 14 वर्ष घोर तपस्या

आबू पर्वत में अब परमात्मा के निर्देशानुसार ओम्-मंडली से नाम बदलकर संस्था का नाम 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' रखा गया। यहीं से परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा, कल्प पहले की तरह फिर से सतयुग की स्थापना का कार्य तीव्र गति से प्रारंभ किया। महाभारत में लिखा है कि पाण्डवों ने 12 वर्ष वनवास और 1 वर्ष अज्ञात-वास किया था। सिंध में 1937 से 1950 तक 13 वर्ष अपने बोर्डिंग में पहले 12 वर्ष लोगों से अलग और फिर एक वर्ष उन्हीं लोगों की कुदृष्टि से अज्ञात रहकर इन अहिंसक पाण्डवों अथवा शिव-शक्तियों ने तपस्या की। इन शिव-शक्तियों में दादी प्रकाशमणि भी शामिल थी। जिन्होंने परमात्मा के तन के साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के सान्निध्य में 14 वर्षों तक अज्ञातवास में रहकर ईश्वरीय शक्तियां अर्जित की। परमात्मा के दिर्नेशानुसार इस प्रकार जब उन्होंने अपनी अवस्था को उच्च बना लिया, संस्कारों को बदल लिया, योग में स्थिति प्राप्त कर ली, तब ये ज्ञान-गंगा बनकर भारत को पतित से पावन बनाने के लिए चारों दिशाओं में निकली। मनुष्य को सच्चा गीता ज्ञान देकर उनके भटकते हुए मन को शांति दी और उनका वास्तविक परिचय दिया। दुनिया के बदलते दौर में जिस तरह से वह माताओं-बहनों की अलौकिक रूहानी सेना का नेतृत्व करते हुए मनुष्य के सर्वांगीण विकास का कार्य जारी रखा। जो एक इतिहास है।

दादीजी का दिव्य संदेश

दादीजी ने विश्व के कई राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय आयोजनों में स्पष्ट संदेश दिया था कि-

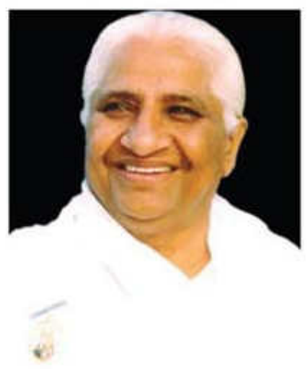

- आज का मनुष्य निरूद्देश्य भटक रहा है। वो विभिन्न आकर्षणों के पीछे दौड़ रहा है। अल्पकाल का सुख ही सच्चा सुख नजर आने लगा है। परंतु यह कोरी मृगतृष्णा है। सच्चा सुख तभी प्राप्त होता है जब मानव स्वयं को जानेगा, पहचानेगा और अपनी श्रेष्ठता से परिचित होगा।
- यह प्रकृति का विधान है कि जो मान-शान प्राप्त करने का प्रयास करता है, उसे अपमान का सामना अवश्य ही करना पड़ता है। आध्यात्मिकता यह कहती है कि आपको आत्म सम्मान एवं अनादि स्वरूप में स्थित रहना सीखना होगा। जब आप यह सीख जाएंगे तभी सारा विश्व आपको सम्मान देगा।
- मैंने अपने जीवन में यही सीखा है कि वास्तव में आपके शत्रु ही आपके सगे मित्र हैं क्योंकि वे आपको किसी न किसी प्रकार की शिक्षा अवश्य ही देते हैं।
- जब आप दूसरों के साथ व्यवहार करें तो आप उनकी भावनाओं को समझें और आपसी प्रेम एवं सहयोग को बनाए रखें तो कभी भी आपस में विवाद नहीं होगा। इसके लिए जिद और स्वयं को सिद्ध करने के संस्कार को मिटाना होगा।
- समय के साथ चलना ही सुख-सौंदर्य का परिधान पहनना है। समय पर किया गया कार्य जहां मानव आत्मा को सफलता देता है, वहीं उसे महत्वपूर्ण भी बनाता है। यदि मनुष्य प्रायश्चित के क्षणों को चुनौती देना चाहता है तो समय की अवहेलना से बचना चाहिए। अनमोल क्षण एक भी छूट जाता है तो जीवन की सार्थकता पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है।
- सफलता का वृक्ष दृढ़ संकल्प की धरा पर ही पल्लवित होता है। हमें आज के गतिशील जगत में यदि हर कार्य को सफल करना हो तो यह ध्यान रखें कि सर्वप्रथम हमें स्वयं में निश्चय है? प्रभु पिता में निश्चय है? तथा कर्म के प्रति निष्ठा है। साथ ही यह भी याद रखने की बात है कि सफलता एक सीढ़ी है जिस पर स्वयं हमें चढ़ना होता है। यह लिफ्ट नहीं है जो आपको स्वयं चढ़ा ले जाएगा। अथक परिश्रम और लक्ष्य के प्रति एकाग्रता इसके स्तम्भ हैं। मानव को आत्मीय गुणों का आह्वान करके गुणमूर्त बनना ही होगा। सत्यता, पवित्रता, व्यावहारिकता, विनम्रता ही इसके खाद का कार्य करते हैं, जिससे हमें सफलता रूपी पुष्प प्राप्त होते हैं।
- सभ्यता के विकास के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, परंतु वर्तमान समय आध्यात्मिक शिक्षा की बहुत आवश्यकता है। क्योंकि आज के युवक बिना किसी चरित्र एवं नैतिकता के पल रहे हैं और यही कारण है कि आज की समस्याओं का प्रभाव केवल सामाजिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि भौतिक स्तर पर भी देखने को मिल रहा है। आजकल के युवकों के कार्य एवं व्यवहार अनैतिक होने के कारण उनके स्वास्थ्य पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।
- मिलियन मिनट्स ऑफ पीस कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए दादी जी ने यह संदेश दिया था कि दुनिया के प्रत्येक देश के सभी छोटे-बड़े शहर के हर एक व्यक्ति को अपने दिल में यह प्रतिज्ञा कर लेनी चाहिए कि हम प्रतिदिन एक क्षण के लिए प्रकृति को, पांच तत्वों को, प्रत्येक आत्माओं को एवं प्रत्येक जीव-जन्तुओं को शांति का दान देंगे। हम शांति के दाता के बच्चे हैं, दु:ख-दाता के बच्चे नहीं हैं। परमपिता परमात्मा दु:ख का दाता नहीं परंतु शांति के दाता हैं। सर्व को यह समझना चाहिए कि हम सब एक ही पिता की संतान हैं, एक शांति ही हम सबका स्वधर्म है, हम सब एक ही आध्यात्मिक नियम के अंदर चलने वाले हैं। एक ही प्रेम की भाषा हम सभी बोलने वाले हैं और एक ही एकता के उसूलों को मानने वाले हैं। यदि मनुष्यों को यह समझ आ जाए तो आपसी व्यवहार स्नेहयुक्त हो जाएगा।
- अन्तर्राष्ट्रीय शांति वर्ष में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए दादी ने कहा था कि व्यक्तिगत शांति ही विश्व शांति का आधार है और यही अनेकों को शांति की राह दिखा सकती है। यही हमारा लक्ष्य है। हम हर एक को कहना चाहते हैं कि आप हर एक सदा जागृत रहें। प्रत्येक इकाई महत्वपूर्ण है। जैसे एक-एक बूंद से तालाब का निर्माण होता है, एक-एक ईंट से महल तैयार होते हैं, वैसे ही एक आत्मा की ज्योति जगने से सम्पूर्ण विश्व की आत्माओं की ज्योति जगा सकती है, एक से दस, दस से सौ, सौ से हजार जागृत होंगे।

मैं तो निमित्त सेवाधारी हूं

एक बार शासकीय अधिकारियों का ग्रुप दादी से मिल रहा था। एक अधिकारी ने पूछा दादी एक विभाग का हेड होने के नाते मुझे कामकाज एवं जिम्मेदारी के कारण बहुत तनाव रहता है, परंतु आप तो सारे विश्व में व्यापक अनेक सेवाकेंद्रों की प्रशासिका हैं तो क्या आपको तनाव नहीं होता? दादी ने उत्तर दिया कि मुझे हेडेक बिल्कुल नहीं रहता, क्योंकि मैं स्वयं को हेड मानती ही नहीं हूं। हमारी संस्था का हेड परमपिता परमात्मा शिव है, मैं तो एक निमित्त एवं सेवाधारी हूं। ये थी हमारी दादी की महानता और विनम्रता। दादाजी के पास जाने में किसी को कभी हिचक या डर नहीं लगता था क्योंकि वह बड़ा बनकर व्यवहार नहीं करती थीं।

ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश, निदेशक, इंदौर व छत्तीसगढ़ जोन

विनम्रता की मिसाल थी

दादीजी के बोल में कभी कटुता दिखाई नहीं दी। धैर्य और प्रसन्नता सदा उनके मुखमंडल पर रहती थी। एक बार मधुबन में धार्मिक सम्मेलन रखा था। जिसमें उच्च कोटि के काफी संत आए हुए थे। दादी ने सभी के ठहरने की व्यवस्था के बारे में पूरी जानकारी ली। साथ ही दादी ने कहा स्वयं वहां जाकर प्रबंध देखना चाहती है। उसी समय दादी को साथ लेकर जब हम प्रत्येक संत के कमरे में गए तो वह दृश्य देखने लायक था। संतों को विश्वास ही नहीं हो पा रहा था कि दादी स्वयं चलकर उनके लिए की गई व्यवस्था को देखने व उनसे मिलने आई हैं। यह दादी की महानता और विनम्रता की मिशाल थी।

ब्रह्माकुमार अमीरचंद्र, निदेशक, पंजाब जोन, चंडीगढ़

आज भी नयनों में समाई

एक बार मैं दादी के पास थी तो दादी ने कहा कि देखो मेरे सामने बाबा खड़ा है। थोड़ी देर के बाद दादी जी ने कहा सारे दिन में ऐसा कोई भी समय नहीं होता है जब बाबा हमारे सामने नहीं होता है। दादी के ये अनुभवयुक्त महावाक्य मेरे दिल में समा गए और मुझे यह समझ में आ गया कि भगवान की मूरत सारा दिन नयनों में समायी रह सकती है। दादी जी सदा यह अनुभव कराती थी कि जो पालना और संस्कार हमें बड़ों से मिले हैं वही संस्कार भाई-बहनों को भी देने हैं।

ब्रह्माकुमारी रानी, प्रभारी, ब्रह्माकुमारीज,पटना-मुजफ्फरपुर क्षेत्र

पेज एक से जारी.....

1993: इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन यूनिवर्सल हार्मनी का आयोजन माउण्ट आबू में किया गया। जिसका उद्घाटन भारत के प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हाराव ने किया एवं युवा सद्भावना साइकिल यात्रा का आयोजन।

1994: सामाजिक सेवाओं में उत्कृष्ट योगदान के लिए महाराष्ट्र के तत्कालीन सीएम शरद पवार ने जाइन्टस अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार भेंट कर दादीजी को सम्मानित किया।

1996: इंडो-नेपाल हेल्थ अवेयरनेस कैम्पेन का आयोजन।

2000: भारत के 24 मुख्य शहरों से २४ ज्योतिर्लिंगम रथ यात्राएं निकाली गई।

2000: इंटरनेशनल ईयर फॉर द कल्चर ऑफ पीस मेनिफेस्टो-2000 कार्यक्रम के अंतर्गत पूरे भारत से तीन करोड़ लोगों से फार्म भरवाए गए। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा मानव संसाधन मंत्री मुरली मनोहर जोशी ने भी फॉर्म भरकर इस अभियान में योगदान दिया।

2001-03: पूरे भारत में विश्व बंधुत्व व सद्भावना की भावना को लेकर मेगा प्रोग्राम।

2004: युवा एवं खेल मंत्रालय के सहयोग से संस्था के युवा प्रभाग ने भारत की सात राजधानियों में युवा महोत्सव का आयोजन किया गया।

2006-07: शांति एवं शुभभावना अभियान एवं वर्ल्ड पीस फेस्टीवल का आयोजन दिल्ली में किया गया।

रमा से दादी प्रकाशमणि बनने का सफर

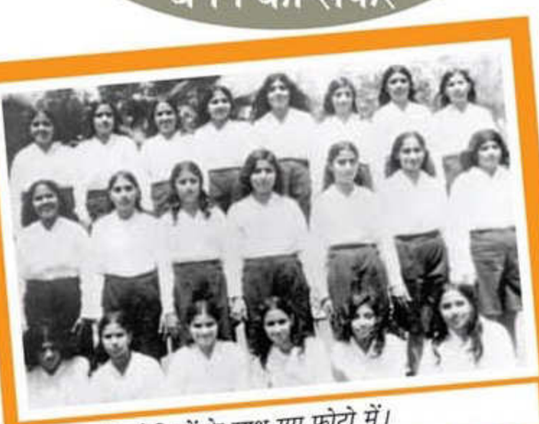

रमा अपनी सहेलियों के साथ ग्रुप फोटो में।

रमा से बनी ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि।

ब्रह्मा बाबा के साथ ग्रुप फोटो में दादी प्रकाशमणि।

बेहतर विश्व के लिए वैश्विक सहयोग विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी एवं यूएन के महासचिव सैंफ्राचुक व अन्य।

मदर टेरेसा के साथ विश्व शांति पर चर्चा करते हुए दादी।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के साथ दादी प्रकाशमणि एवं मुन्नी बहन।

1992 में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में दादीजी को आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षा के क्षेत्र में उत्थान हेतु उनके योगदान के लिए डॉक्टर ऑफ लिटरेचर की मानद उपाधि से सम्मानित करते राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. एम चन्ना रेड्डी।

गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ ज्ञान चर्चा करते हुए दादी प्रकाशमणि

पूरी दुनिया में फैला ईश्वरीय पैगाम

जब संस्था की बागडोर दादी ने संभाली तब संस्था अपने शैशव काल में थी। परमात्मा ने संस्था के निर्देशन के लिए दादी प्रकाशमणि को निमित्त बनाया। दादी ने परमात्मा के आदेशों की पालना करते तथा उनके सान्निध्य में संस्था को दुनिया के हर मुल्क में ला खड़ा कर दिया। दादीजी ने खुद अपनी निजी जिंदगी में भी मानवीय मूल्यों को आत्मसात कर प्रकाश स्तंभ बनी यही कारण था कि दादी के जिधर भी दो पैर चल पड़ते उधर, करोड़ों पैर अपने आप खिंचे चले आते। उनकी दृष्टि में ऐसी रूहानियत की शक्ति थी कि जिस पर पड़ती वह अपने असली स्वरूप में खो जाता। दादी ने स्वयं को परमात्म शक्तियों एवं वरदानों से इतना भरपूर कर लिया था इतने बड़े संगठन की मुख्यप्रशासिका होते हुए भी सदा हल्की और बेफिकर रहती। जहां व्यक्ति अपने परिवार के चार सदस्यों का ख्याल ठीक से नहीं रख पाता, वहीं दादी लाखों लोगों का ख्याल परिवार से भी बढ़कर रखती।

विश्वबंधुत्व के लिए किया कार्य

दादी प्रकाशमणि जीती-जागती धर्म, संस्कृति व अध्यात्म की मूर्ति हैं। वे जीवन भर भगवदीय सत्ता को धरती पर लाने में प्रयासरत रहीं। दादी जी आने वाली पीढ़ियों के लिए सदैव अनुकरणीय बनी रहेंगी।

बाबा रामदेव, योगगुरु

आत्मिक ऊर्जा से भरी प्रबुद्ध महिला थी

ब्रह्माकुमारी विश्वविद्यालय दादीजी के नेतृत्व में देश में और देश के बाहर अच्छा कार्य किया है। दादी जी आत्मिक ऊर्जा से भरी हुई एक प्रबुद्ध महिला थी। जिनके स्पर्श मात्र से ही निराश व्यक्तियों के जीवन में आशा का संचार हो जाता था।

एसएम कृष्णा, पूर्व विदेश मंत्री, भारत सरकार

नेतृत्व कला से सभी को आकर्षित कर लेती थी

दादी प्रकाशमणि जी ने मानवीय मूल्यों, विश्व-बंधुत्व और शांति को बढ़ाने के लिए सदा कार्य किया है। वह अपने नेतृत्व करने की कला से हर एक को अपनी ओर आकर्षित कर लेती थी।

सुरजीत सिंह बरनाला, पूर्व राज्यपाल, तमिलनाडु

आज भी करोड़ों लोगों के दिल में बसी है दादी

हमें दादीजी से अनेक अवसरों पर मिलने का अवसर प्राप्त हुआ और मुझे दादीजी की आशीर्वाद सदा मिलती रही। दादी आज भी करोड़ों लोगों के दिल और मन में बसी हुई हैं। वह आध्यात्मिक ज्ञान की पराकाष्ठा की जीती-जागती मूरत थी। वह संस्था के लिए कुशल दिशा-निर्देशक और अनेकों लोगों के लिए प्रेरणा की स्रोत थी। वह आज भी हमारे लिए यादगार है।

डी.एन. सहाया, पूर्व राज्यपाल, त्रिपुरा

... और तय स्थान पर हुआ कार्यक्रम

सन् 1973 में दिल्ली के रामलीला मैदान में दो सप्ताह के आध्यात्मिक मेले के आयोजन के लिए सरकार से स्वीकृति मांगी गयी। सारी तैयारियां 14 नवम्बर के उद्घाटन कार्यक्रम के लिए हो चुकी थी। 12 नवम्बर के समाचार-पत्रों में छपा कि रशिया के राष्ट्रपति ब्रेजनेव का अभिनन्दन 19 नवम्बर को रामलीला मैदान में किया जाएगा। दादी जी ने तुरन्त ही 24 घण्टे की योग-तपस्या का कार्यक्रम रखा और उन्होंने कुछ वरिष्ठ भई-बहिनों को डॉ. शंकर दयाल शर्मा के पास कार्यक्रम के स्थान को बदलने का आग्रह करने के लिए भेजा। डॉ.शर्मा ने अपने स्वागत समिति को इकट्ठा किया। यह बहुत ही आश्चर्यजनक बात थी कि उन्होंने तुरंत ही इस कार्यक्रम को लाल किला मैदान में रखा और आध्यात्मिक मेला अपने निर्धारित कार्यक्रम के अनुरूप आयोजित किया गया। इस पर दिल्ली उच्च न्यायालय के एक वरिष्ठ वकील ने कहा कि अवश्य ही आपके पीछे कोई ऐसी आध्यात्मिक शक्ति कार्य कर रही है, जिसके कारण भारत सरकार ने आपके आग्रह को स्वीकार किया।

ब्रह्माकुमार निर्वैर, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू

दादी में दूरांदेशी बुद्धि गजब की थी

दादी में दूरांदेशी बुद्धि गजब की थी। वह कोई भी कार्य करती तो उसको दूरगामी होकर देखती और उसी अनुसार निर्णय लेती। यह उनकी महानता थी कि संस्था की मुख्य प्रशासिका होने के बाद भी छोटे भाई-बहनों से किसी भी कार्य के संबंध में सलाह-मशवरा अवश्य करती थी। दादी जी प्रत्येक पल का सदुपयोग करती थी और जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ नहीं जाने देती। दादी का हर एक कर्म हमें आदर्श जीवन की शिक्षा देता और वह अपने कर्मों से ही हमें सबकुछ सिखा देती थी।

ब्रह्माकुमार रमेश शाह, अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

दादी के संग रहना माना ईश्वर पिता के संग रहना

ईश्वरीय यज्ञ में समर्पित होने का श्रेय दादी को ही जाता है। दादी के संकल्प में इतनी शक्ति थी कि असंभव कार्य भी संभव हो जाता था। दादी के संग रहना माना ईश्वर पिता के संग रहना, उनके साथ बात करना माना परमात्मा पिता के साथ बात करना था। दादी ने हर पल एक बच्चे की तरह मेरा मार्गदर्शन किया एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए सदा प्रयासरत रहती थी। दादीजी हमेशा कहा करती थीं कि कभी न संकल्प, न वचन, न कर्म, न धन, न शक्ति व्यर्थ जानी चाहिए। हर वस्तु को पूर्णरूप से सफल करना चाहिए। उनके संबंध में आने वाला हर व्यक्ति महसूस करता था कि मैं भी इन जैसा बनूं, इन जैसा सोचूं, इन बात करूं, इन जैसे कर्म करूं, मैं भी अपने जीवन को इन जैसे अलौकिक जीवन में परिवर्तन करूं।

ब्रह्माकुमार मृत्युंजय, कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू

जीवन की कितनी ही उपलब्धियों में दादीजी का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग रहा, उनका वर्णन बड़ा विस्तृत है। दादी में दूरदर्शिता अद्भुत थी वह कोई भी कार्य करने से पहले उसके दूरगामी प्रभाव व उपयोग को ध्यान में रखकर ही करती थी। साहित्य के संबंध में दादी का मार्गदर्शन और सहयोग हमेशा मिलता रहता था।

ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश, संपादक ज्ञानामृत मैगेजिन, शांतिवन

निर्भयता की साक्षात् प्रतिमा थी

बहुमुखी व्यक्तित्व की धनी दादी जी निर्भयता की साक्षात् प्रतिमा थी। समस्याओं का समुचित समाधान करना उनकी दिनचर्या में शामिल था। वे हर समस्या के हर पहलू की विस्तृत विवेचना करती, फिर दोनों पक्षों के प्रति तटस्थ भाव रख निर्णय लेती, जो कि सहज ही सर्वमान्य होता था।

ब्रह्माकुमारी सरला दीदी, निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज़, गुजरात जोन

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने अपने नश्वर शरीर का त्याग करते समय सारी शक्तियां दादी के हाथों में सौंप दी। यह इशारा स्वयं परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा बाबा को पहले ही बता दिया था, क्योंकि दादी प्रकाशमणि बचपन से ही अलौकिक और दिव्य आभा से परिपूर्ण थी। बाबा ने यह जानते हुए ही इन्हें और परिपक्व बनाने के लिए 14 वर्ष तक योग और तप की गुफा में साधना कराते रहे। 18 जनवरी, 1969 को बाबा ने अपने नश्वर शरीर का त्याग किया।

दादी ने संभाली संस्था की कमान

संस्था के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के देहावसान के बाद यह सवाल उठने लगे थे कि आखिर संस्था आगे कैसे बढ़ेगी। यहां तक कि कई लोग जो संस्था के ज्ञान एवं सिद्धांतों से सहमत नहीं थे और प्रफुल्लित भी होते रहे कि शायद अब संस्था आगे नहीं चल पाएगी। इसका प्रबल कारण यही था कि माताओं बहनों की संस्था थी और इसके मुखिया ब्रह्मा बाबा दुनिया में नहीं रहे। परन्तु परमात्मा शिव तथा प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के निर्देशन में दादी ने कुशलतापूर्वक संस्था का निर्देशन करते हुए आगे बढ़ी। ब्रह्मा बाबा के देहावसान के बाद दादी प्रकाशमणि के नेतृत्व में दादी जानकी ने विदेश की सेवाओं का श्रीगणेश किया। यह कारवां इतना बड़ा हुआ कि इसकी जड़ें दुनिया के हर मुल्क में फैल गई।

सभी वर्गों के लोगों में बदलाव की योजना

दादी प्रकाशमणी के नेतृत्व में संस्था दिनोंदिन फलने-फूलने लगी। दादी जितना परमात्मा के समीप जाती गई परमात्मा ने इन्हें शक्तियों से इतना भरपूर कर दिया कि वे एक महान नेता के साथ अभिभावक की भूमिका में निपुण हो गई। इतना ही नहीं बल्कि वे समाज के सभी वर्गों एवं तबकों के लिए योजनाओं पर भी कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। इसके साथ ही उन्होंने सन् 1985 में 18 प्रभाग का निर्माण किया। जिससे सभी वर्गों के लोग परमात्मा द्वारा दिए जा रहे ईश्वरीय ज्ञान को अपने जीवन में उतार सकें।

शांति का प्रकाश फैला रहा प्रकाश स्तंभ

दादीजी कुशलता के नये कीर्तिमान स्थापित करते हुए संस्था को पूरे दुनिया में प्रतिष्ठित कर दिया। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था दुनिया की एकमात्र संस्था बनी जिसका संचालन माताओं बहनों के हाथों में है। यही नहीं जिनके संस्कार उनके पैतृकता से नहीं हो पाया उन लोगों के जिन्दगी में भी मूल्यों के बीज बोये और एक श्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण किया। दादी जी इस लाखों लोगों की रूहानी सेना तैयार कर खुद फरिश्ता बन गई और 25 अगस्त, 2007 को इस दुनिया से विदा हो गई। आज वह भले ही हमारे बीच नहीं है परन्तु उनके याद में निर्मित प्रकाश स्तम्भ आज भी पूरी दुनिया में विजडम और शक्ति के प्रकाश का प्रकम्पन फैला रहा है। जो कोई भी इस प्रकाश स्तम्भ पर आता दादी के सान्निध्य का अनुभव किये बिना नहीं रह पाता। आज भी दादी की भासाना, वात्सल्य और ममता हमें पोषित करती रहती है। ऐसे महान, दिव्य और अलौकिक शक्ति को शत् शत् नमन्।

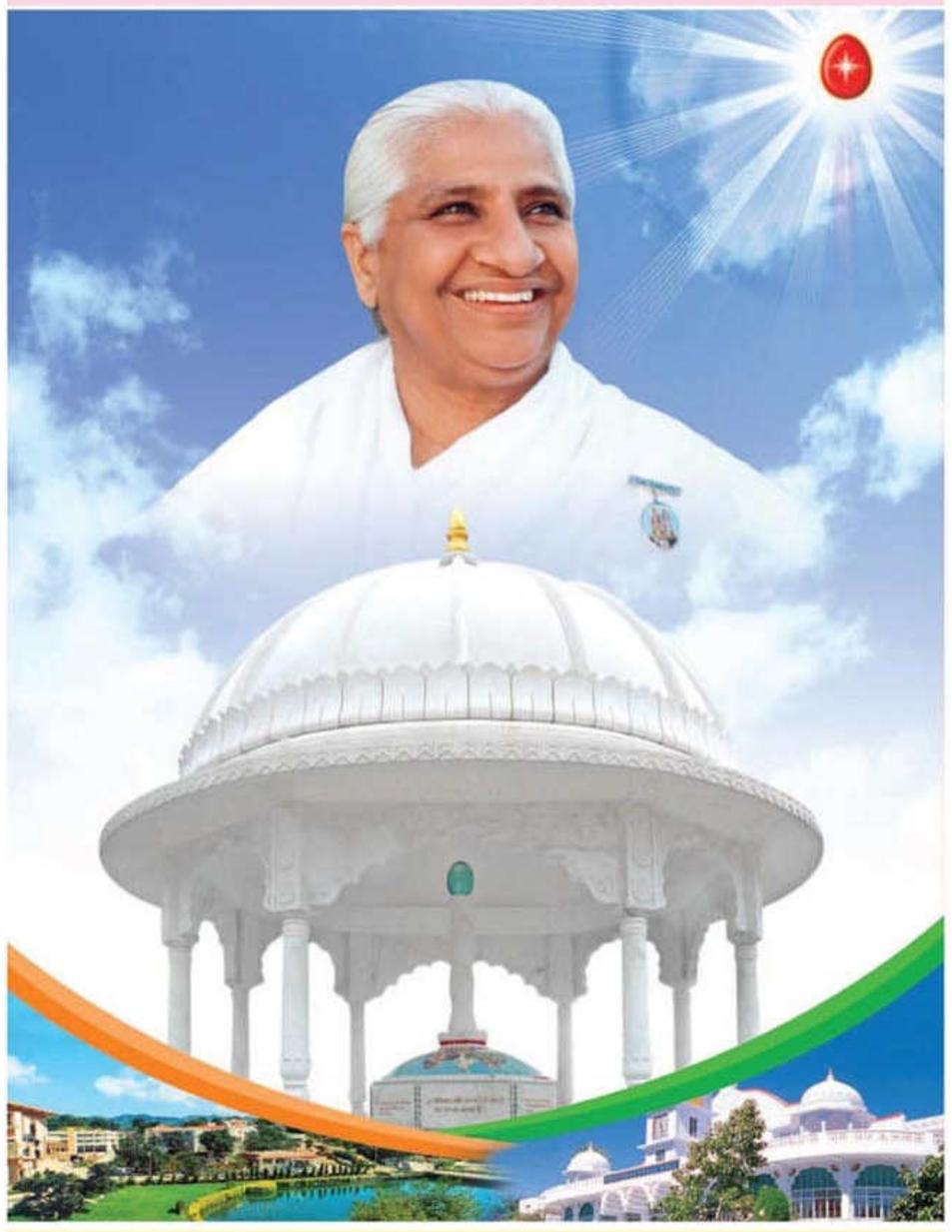

माउण्ट आबू में लाखों लोगों का मेला

दादीजी तप और त्याग से इतना उज्ज्वल हो गई थी कि वह एक फरिश्ता के समान बन गई थी। उनका चुम्बकीय व्यक्तित्व लोगों को दूर से ही आकर्षित करने लगा था। उनकी ऊर्जा और मां का वात्सल्य उन्हें दादी मां के रूप में प्रतिष्ठापित कर दिया। माउण्ट आबू अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय में भी देश-विदेश से आने वालें लोगों की संख्या में लगातार इजाफा होने लगा। उनके कुशल नेतृत्व का ही यह परिणाम था कि यह संस्था इतना विस्तार को पाई और आबू रोड में भी संस्था का विस्तार हुआ और हजारों लोगों को एक साथ रहने और ईश्वरीय अनुभूति करने के लिए शिवालय बन गया।

ईश्वरीय ज्ञान से बदली लाखों लोगों की जिंदगी

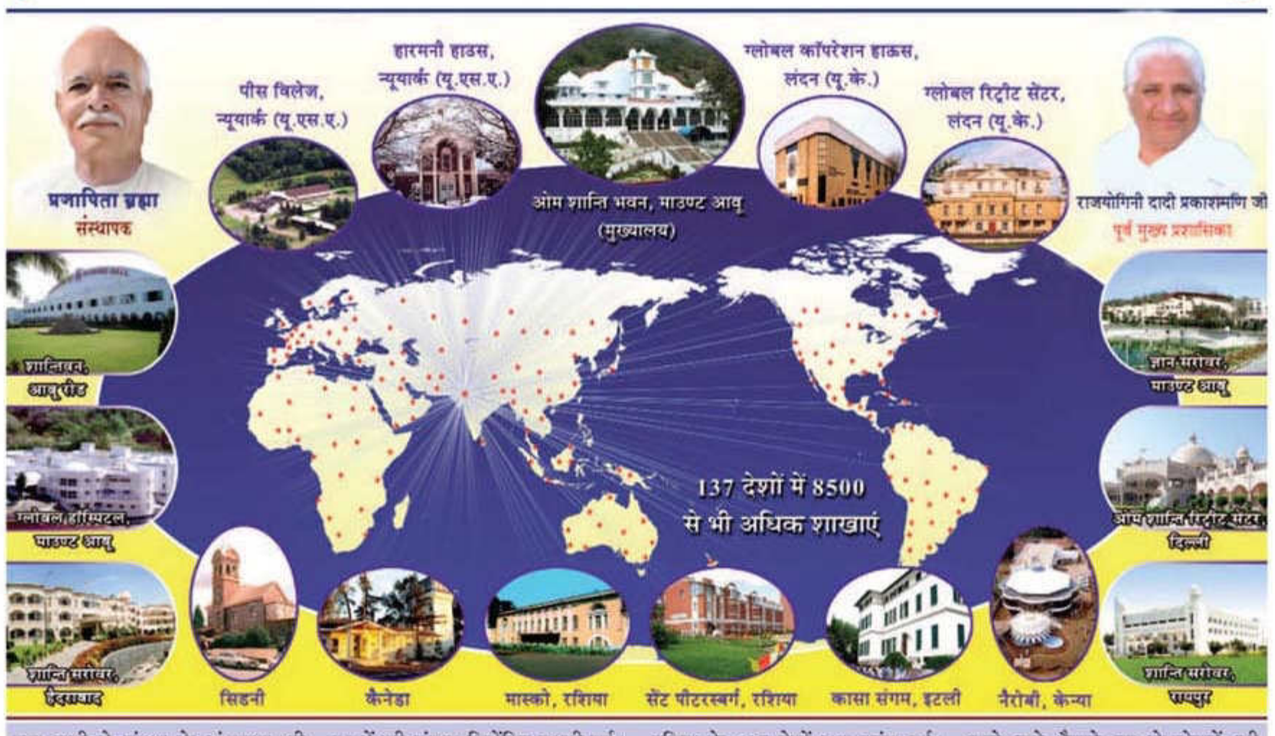

जब दादी ने संस्था के संचालन की जिम्मेदारी संभाली तब इस संस्था में महज थोड़े से सेवाकेन्द्र थे। परन्तु संस्था की सेवाएं वृद्धि को पाई और युवा भाई-बहनों की संख्या दिनोंदिन बढ़ती गई। भारत के कोने-कोने में तो सेवाकेंद्र खुले ही साथ ही विदेशों में भी सेवाओं की धूम मची। धीरे-धीरे यह संस्था दुनिया के 137 देशों तक पहुंच गई। इसके साथ ही भाई-बहनों की संख्या भी दस लाख के पार हो गई। यह दादीजी का कुशल नेतृत्व ही था कि इतने बड़े पैमाने पर सेवाकेन्द्रों की स्थापना हुई। दादी के ममता और स्नेहमयी पालना में अनेक देशों के लोग भारतीय संस्कृति के रंग में रंग गए।

प्रेम, शक्ति और नम्रता का एक अद्वितीय व्यक्तित्व

दादीजी प्रेम, शक्ति और नम्रता का एक अद्वितीय व्यक्तित्व थी। संस्था की मुख्य प्रशासिका होने के बावजूद भी उनमें अहंकार और अभिमान रिंचक मात्र भी नहीं था। उनके जीवन में लव और लॉ का बैलेंस देखने को मिलता था। वो बड़ों के साथ बड़ों जैसा व्यवहार करती थी और छोटे के साथ स्नेह प्यार से घुल-मिल जाती थी। इस विश्वव्यापी संस्था को चलाने के लिए वह सर्व का सहयोग लेती थी और सबको साथ में लेकर चलती थी। ऐसी थी हमारी दादी।

ब्रह्माकुमार शांतनु, मुख्यालय संयोजक, मीडिया प्रभाग, माउण्ट आबू

परमात्म प्यार में रहना अपना वरदान बना लिया था

दादी एक महान व सफल प्रशासक थी। वे जानती थीं कि यदि वातावरण में खुशी व प्रेम हो तो कार्य करने वालों की कार्यशक्ति बढ़ जाती है। खुशी तो मानो उनके साथ वरदान रूप में रहती थी। उनके चेहरे पर खुशी की चमक सभी को दिखाई देती थी। दादी आध्यात्मिक रूप से इतनी सशक्त थी कि जीवन में कोई भी परिस्थिति आई, लेकिन उनका अंतरचित्त शांति की गहन अनुभूति में रहता था। दादी नहीं चाहती थी कि हमारे स्वीट परिवार में कोई असंतुष्टता के साथ जी रहा हो। योगयुक्त हो परमात्म प्यार में रहना इसे उन्होंने अपना स्वभाव बना लिया था।

ब्रह्माकुमार सूर्य, वरिष्ठ राजयोग शिक्षक, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू

दादी ने संस्था को प्रकाश की तरह बढ़ाया

दादी प्रकाशमणि ने इस संस्था को प्रकाश की तरह बढ़ाया है। वे हमेशा इसमें विश्वास रखती थी कि लोगों को कैसे ज्ञान के माध्यम से व्यावहारिक जीवन में सुख, शांति और खुशी लाई जाए। वे स्वयं इसका जीता-जागता उदाहरण थी। उन्होंने सदा समाज के कल्याण के लिए कार्य किया।

प्रतिभा देवीसिंह पाटिल, पूर्व राष्ट्रपति, भारत

मैं हमेशा दादीजी को फालो करता हूं

दादी जी का प्रशासन करने का तरीका कमाल का था। वो कभी भी किसी की न तो गलती बताती और न ही कभी किसी को डांटती थी। हमेशा स्नेह व प्यार के साथ इस विश्वविद्यालय का वर्ल्ड वाइड प्रशासन करती थीं, जो अपने आप में एक बहुत बड़ा आश्चर्य है। मैं हमेशा दादीजी को फालो करता हूं। न्यायालय में प्रशासन का कार्य दादीजी के तरीके से करता हूं। परिणाम होता है कि सारे कर्मचारी, सभी न्यायाधीश, अधिवक्ताओं सभी से आवश्यकता से अधिक आउटपुट मिलता है। सभी बड़ी खुशी-खुशी से अपना कार्य कर पक्षकारों की सेवा करते है। भ्रष्टाचार के रास्ते पर जाने की सोचते भी नहीं हैं। यह दादी की प्रशासन फिलॉसफी का कमाल है।

भगवानदास राठी, न्यायाधीश, उच्च न्यायालय, म.प्र.

आध्यात्मिक जगत की एक महान विभूति थी

दादी प्रकाशमणि आध्यात्मिक जगत की एक महान विभूति थी। वे न केवल कुशल प्रशासक थी, बल्कि राजयोग के साधकों के लिए प्रेरणा स्तंभ थी। दादी जी ने अध्यात्म दर्शन के माध्यम से देश-विदेश में शांति, सद्भाव व भाईचारे की भावना को बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। दादीजी ने मानवता की सेवा में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

वसुंधरा राजे, पूर्व मुख्यमंत्री, राजस्थान

दादी विश्व के लिए एक शांतिदूत है

दादी जी सिर्फ महिला सशक्तिकरण के लिए ही कार्य नहीं करती थी बल्कि मानव के चरित्र को भी उठाने का कार्य करती थी। वे ब्रह्माकुमारीज़ के लिए एक आदर्श हैं और विश्व के लिए शांतिदूत। दादी जैसी बहुत ही कम महिला देखने को मिलती है। जिसमें नेतृत्व का गुण पाया जाता है। वह मानव के दु:खों को दूर करने के लिए हमेशा प्रयासरत रहती थी।

जी.पी. कोईराला, पूर्व प्रधानमंत्री, नेपाल

मूल्यों का किया संरक्षण

दादी जी हमेशा मानवीय मूल्यों के संरक्षण के लिए कार्य करती थी। राजयोग मेडिटेशन से होने वाले लाभों को वे सभी के साथ बांटती थी। वे अपने कार्य के द्वारा विश्व में प्रसिद्ध हो गई। उन्होंने आधुनिक समाज को राजयोग के लाभों से अवगत कराया।

नवीन चंद्र रामगुलाम, प्रधानमंत्री, मॉरिशस

पीस ऑफ माइंड चैनल ईश्वरीय उपहार

'पीस ऑफ माइंड' दुनिया का एकमात्र ऐसा चैनल है, जिसमें विज्ञापन नहीं है। सभी को ईश्वरीय निमंत्रण और परमात्मा का सत्य परिचय मिले। इसके लिए विज्ञान के साधनों का अहम योगदान है। जिसमें सिर्फ ईश्वरीय संदेश प्रचारित एवं प्रसारित होता है। आज इस चैनल से जुड़कर लाखों लोगों ने अपने जीवन को नई दिशा दी है। कई लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आए है। आधुनिक युग में आज चैनलों में जहां अश्लीलता, फूहड़ता परोसी जा रही हैं वहीं पीस ऑफ माइंड चैनल लोगों के जीवन में आशा की एक नई किरण बनकर सामने आया है। इस चैलन के द्वारा भारतवर्ष में सकारात्मक चिंतन, मेडिटेशन एवं वरिष्ठ राजयोगी भाई-बहनों के माध्यम से लोगों के आम जीवन से जुड़ी समस्याओं का समाधान किया जा रहा है। जिसे वीडियोकान, रिलायंस डीटीएच के अलावा केबल टी.वी. पर कहीं भी देखा जा सकता है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें मो... 8140211111, 7891109999, ईमेल: karunabk@gmail.com

ईश्वरीय संदेश

आपको बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि स्वयं परमपिता शिव परमात्मा का इस धरा पर अवतरण हो चुका है। परमात्मा पिछले 77 वर्षों से नई दुनिया की स्थापना का कार्य कर रहे है। विषय विकारों से ग्रसित, इस पतित कलियुगी दुनिया को पावन बनाने परमात्मा आते है। परमात्मा साकार मनुष्य तन का आधार लेकर हम आत्माओं को स्यवं की सत्य पहचान कराते है। परमात्मा सच्चा गीता ज्ञान देकर राह से भटकी हुई आत्माओं को मुक्ति और जीवनमुक्ति का रास्ता बताते है। परमपिता परमात्मा ने बताया कि तुम मनुष्यात्माओं का वास्तविक घर परमधाम, निर्वाणधाम, ब्रह्मलोक है। तुम्हारा वास्तविक घर वहीं है। इस सृष्टि पर तुम आत्माएं अपने ड्रामा अनुसार पार्ट बजाने आती हो। अब फिर मैं तुम्हें वापस ले जाना आया हूं। इसलिए इस अज्ञान निद्रा से जागों और 21 जन्मों के राज्य भाग्य का वर्सा मुझ से लेकर अपना भाग्य बनाने का सुअवसर है। गीता में भी भगवान ने कहा है कि मैं कल्प-कल्प के संगमयुगे आते हूं।

स्थानीय सेवाकेंद्र का पता:

प्रकाशक: ब्रह्माकुमार करुणा द्वारा मीडिया एवं पब्लिक रिलेशन विभाग ब्रह्माकुमारीज़ के लिए प्रकाशित एवं डीबी प्रिंट साल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: मोबाइल 9413384884, 9414156615, 9414193999 फोन: 02974-228230, **Email: bkmediaprhq@gmail.com**